SAPTHAGIRI (HINDI)
SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY
Volume:54, Issue: 09
FEBRUARY-2024, Price Rs.20/-
No. of pages-56.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

फरवरी-2024

रु.20/-

दि. 23-12-2023 को तिरुमल में वैकुंठ एकादशी के संदर्भ में स्वर्णरथ पर उभयदेवेरियों सहित श्री मलयप्पस्वामीजी आरूढ़ होकर चार माडावीथियों में भक्तों को दर्शन दिया। इस संदर्भ में अधिक संख्या में भक्तगण भाग लिया। इस कार्यक्रम में ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष श्री बी.करुणाकर रेड्डी, ति.ति.दे. ई.ओ. श्री ए.वी.धर्मरिड्डी, आई.डी.ई.एस., तिरुपति जे.ई.ओ. (एच.&ई.) श्रीमती सदाभार्गवी, आई.ए.एस., के साथ आदि अन्य अधिकारीगण ने भाग लिया।

अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे।
गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः॥

(- श्रीमद्भगवद्गीता - सांख्ययोग २-११)

श्री भगवान् बोले- हे अर्जुन! तू न शोक करनेयोग्य मनुष्यों के लिये शोक करता है और पण्डितों के-से वचनों को कहता है; परंतु जिनके प्राण चले गये हैं, उनके लिये और जिनके प्राण नहीं गये हैं, उनके लिये भी पण्डितजन शोक नहीं करते।

नाटिकि नाडे ना चदुवु
माटलाडुचुनु मरचे चदुवु ॥नाटिकि॥

एनय नीतनि एरुगुटके पो
वेनुकवारु, चदिविन चदुवु
मनसुन नीतनि मरचुटके पो
पनिवडि इप्पटि प्रौढ़ल चदुवु ॥नाटिकि॥

तेलिसि इतनिनि, तेलियुटके पो
तोलुत कृतयुगादुलु चदुवु
कलिगिन नीतनि कादनने पो
कलियुगंबुलो कलिगिन चदुवु ॥नाटिकि॥

परमनि वेंकटपति गनुटके पो
दोरलगु ब्रह्मादुल चदुवु
सिरुल नीतनि मनचेडि कोरके पो
विरसपु जीवुल विद्यल चदुवु ॥नाटिकि॥

सच्ची पढ़ाई का अर्थ समझाते हैं। आजकल की पढ़ाई तो आधार-रहित है। पढ़ाई के बाद दूसरे ही दिन उसे लोग भूल जाते हैं। पुराने जमाने में 'विद्या' का अर्थ होता था - परमात्मा के तत्त्व को पूरी तरह अवगत कर लेना। लेकिन आज की विद्या तो प्रधानतया उस परतत्त्व को भूल जाने के लिए है। कृत युगादियों में 'परमात्म तत्त्व' के बारे में जानकारी रखते हुए भी अधिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रयास किये जाते थे, लेकिन इस कलियुग की शिक्षा, तो परमात्म तत्त्व को नकारने और धिक्कारने के लिए ही है। ब्रह्मादि देवताओं का पठन-पाठन तो वेंकटपति के परतत्त्व को प्रमाणित करने के लिए ही है। लेकिन आज के फीके जीवनों में अध्ययन का अर्थ- जीवन के सुख-भोगों में अपने आपको खोकर, भगवत् तत्त्व का विस्मरण ही रहा है।

संकीर्तना सौजन्य - ति.ति.दे. प्रकाशक, अन्नमाचार्य गीत-माधुरी, डॉ.पी.नागपद्मिनी

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

श्री वेंकटेश्वर अन्नप्रसाद ट्रस्ट

तिरुमल, तिरुचानूर में हजारों की संख्या में भक्तों को प्रतिदिन अन्नप्रसाद वितरण होने की बात भक्तों को विदित ही है। अब ति.ति.दे अन्नप्रसाद ट्रस्ट ने भक्तों, दाताओं को दान देने का और खूना अक्सर देना चाहता है। इसलिए एक दिन दान की योजना प्रवेश कर रहा है।

एक रोजाना खर्च -

1. एक दिन - 38 लाख
2. अल्पाहार - 8 लाख
3. मध्याह्न भोजन - 15 लाख
4. रात्रि भोजन - 15 लाख

इस नकद को दाताओं से संग्रहित करने के लिए सिद्ध हो रहा है। तिरुमल तिरुपति देवस्थानों का अन्नदान ट्रस्ट दाताओं - व्यक्तियों/कंपनियों/संस्थाओं/ट्रस्टों/संयुक्त ढंग की व्यवस्था हो सकती है। ये रोजवारी नकद कुल 25 लाख या अल्पाहार - 5 लाख, दोपहर का भोजन - 10 लाख या रात्रि भोजन - 10 लाख प्रदान कर सकते हैं। दाताओं को ति.ति.देवस्थान के द्वारा आयोजित सुविधाएँ एक रीत होंगी। अपने मर्जी के अनुसार सूचित एक दिन पर अन्नदान कर सकती है। और दाता का नाम भी अन्नदान केंद्र में डिस्प्ले होता है।

अन्य विवरण के लिए संपर्क करें -

उप कार्यकारी अधिकारी (डोनार सेल) FAC.,

ति.ति.दे., तिरुमल।

(cdmc.ttd@tirumala.org / www.tirumala.org वेबसाइट में भी दरसा सकेंगे)

दूरभाषा - 0877-2263001 & 0877-2263472.

(सूचना - उपर्युक्त विषयों पर परिवर्तन होनी की संभावना है।)

सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की
आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेंङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति॥

वर्ष-54 फरवरी-2024 अंक-09

विषयसूची

रथसप्तमी पर्व श्रीनिवास का अर्धब्रह्मोत्सव	श्री भूमन करुणाकर रेड्डी	07
श्री वेंकटाचल की महिमा	आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	11
वसंत पंचमी	डॉ.जी.मोहन नायुडु	14
तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर (तिरुपति बालाजी)	प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव प्रो.गोपाल शर्मा	16
भीष्म एकादशी	श्री सी.सुधाकर रेड्डी	19
श्री प्रपन्नामृतम्	श्री रघुनाथदास रान्दड	23
गीतामृत	श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण	25
श्री रामानुज नूट्रन्दादि	श्री श्रीराम मालपाणी	31
सरल विधियों का गुणन	डॉ.वड्डी जगदीश	32
श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108	श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया	35
देवकी	डॉ.के.एम.भवानी	38
कृपाचार्य	डॉ.जी.सुजाता	41
मकई	डॉ.सुमा जोषि	44
फरवरी महीने का राशिफल	डॉ.केशव मिश्र	47
नीतिकथा - सात दिन बचे हैं!!	श्री के.रामनाथन	48
चित्रकथा - ''अपना'' कुछ भी नहीं है	डॉ.एम.रजनी	50
क्विज - 19		52

website: www.tirumala.org or www.tirupati.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है। सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri.helpdesk@tirumala.org

मुखचित्र - उभयदेवेरियों सहित श्री कल्याण वेंकटेश्वरस्वामी, श्रीनिवासमंगापुरम्।
चौथा कवर पृष्ठ - रथ-यात्रा, देवुनिकड़पा।

गौरव संपादक
श्री ए.वी.धर्मारेड्डी, आई.डी.ई.एस.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी(एफ.ए.सी), ति.ति.दे.

प्रधान संपादक
डॉ.के.राधारमण

संपादक
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा

मुद्रक
श्री पी.रामराजु
विशेष अधिकारी,
पुस्तक बिक्री केंद्र & मुद्रणालय,
ति.ति.दे., तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक चित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

एक प्रति .. रु.20-00
वार्षिक चंदा .. रु.240-00
जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) .. रु.2,400-00
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा .. रु.1,030-00

अन्य विवरण के लिए
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 2264359, Editor - 2264360.

सूचना
मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।
- प्रधान संपादक

संपादकीय

अब सावधान रहे!

अर्थागमो नित्य मरोगिता च प्रिया च भार्या प्रिय वा दिनी च।

वश्यश्च पुत्रोऽर्थकरी च विद्‌या षड् जीव लोकस्य सुखानि राजस।।

-(महाभारत-उद्योगपर्व)

सदा धन प्राप्त होना, बिना रोग से स्वस्थ रहना, दिल पसंद पत्नी प्राप्त होना, प्यार से बात करनेवाली पत्नी प्राप्त होना, वचन का पालन करनेवाला पुत्र प्राप्त होना, धनार्जन के लिए समुचित शिक्षा रहना। वे छे मनुष्यों को सुख प्रदान करते हैं। यह महाभारत की सूक्ति है। इन छे सूक्तियों में दूसरी सूक्ति - 'स्वास्थ्य'। मनुष्यों को अत्यंत प्रधान हैं। मनुष्य स्वस्थ रहेगा तो उपर्युक्त पाँच न होने पर भी जीवन बिता सकते हैं। यदि स्वास्थ्य ठीक नहीं हो, तो जैसे आपके पास पाँच होकर भी न होने के समान हैं।

प्राचीन काल में मनुष्य आजानुबाहु, सुदृढ़ शरीर, संपूर्ण स्वास्थ्य, दीर्घ आयु से जीवन बिताए है। यह कहने के लिए हमें घमंड दिखता है पर आजकल के मध्यकाल में अनेक परिवर्तन मानव जीवन को प्रभावित कर रहे हैं। ऐसे, नए परिवर्तनों में बिना देखे-सुने कई बीमारियाँ अचानक मनुष्य के शरीर में प्रवेश कर मानव जाती के जीवन को अव्यवस्थित कर रहे हैं। हजारों महम्मारियाँ, उत्पात मचाते हुए, हमारे चारों ओर फैल रहे हैं। वैसा ही सन् २०१९ ई. में आई हुई भयानक महाम्मारी 'कोरोना कोविड-१९' है। यह बीमारी भूलोक में मानव जाती को खतरे में डकेल दी है। महा संकट को सृजन की है। मनुष्य पल भर भी झबकी लेना या पलक झबकाने के लिए भी भयभीत होते थे। सारी दुनिया को चार दीवारों के बीच में बंधित किया हुआ अमानवीय काल है। यह, वह समय था - गाँव, शहर, नगर, देश मृत्यु पर शोक से तडपा हुआ विषाद काल था। प्रथम दशा समाप्त हुई। अपने मुख पर मुख कवच धारण कर, सांस लेते समय, अपने देश पर दूसरा उपद्रव फूट कर मारण होम सृजन किया है। भगवद कृपा से ''वैद्‌यो नारायणो हरी'' अर्थात - नारायण स्वरूप वैद्‌य चिकित्साओं के कारण, उन महम्मारियों से विमुक्त हुए हैं पर 'कोरोना कोविड-१९' को पूर्ण रूप से विमुक्त होना असंभव है। यह बीमारी आने पर समुचित सतर्कताएँ लेना ही परिष्कार मार्ग है कह कर वैध्य चेतावनी दे रहे हैं। यह वास्तव कह कर कोरोना वयरस अपना विश्वरूप दिखाती हुई परेशान कर रही है। उसी क्रम में कोरोना कई राज्यों में फिर अपना विकृत रूप दिखा रही है। इसी कारण कोरोना नया वेरियंट जे.एन.-१ केशस आ रहे हैं पर वैध्य यह मरणान्तक रोग नहीं है कह रहे हैं। फिर भी हम लापरवाही नहीं रखना चाहिए। इस बीमारी से सदा सतर्क रहना, १ मुख कवच धारण करना, २.कुछ छू ने पर हाथ साबुन से धोते रहना, ३.सामाजिक दूर रखना, ४.संतुलन भोजन करना, ५.ज्यादातर खुली हवा में एकांत रहना इन पाँच पंच सूत्रों को समुचित सावधानी से पालन करना हैं। यही मनुष्य स्वास्थ्य के लिए श्रीराम रक्षा है।

कोरोना नया वेरियंट जे.एन.-१ से लोग बेचैन न होकर निडरता से सर्वान्तर्यामी श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी की प्रार्थना करते हुए, सब समस्त आपत्तियों का निवारक सुंदरकाण्ड का पारायण करते-सुनते हुए, आत्म निर्भरता, आत्म संयम, आत्मविश्वास से मानसिक धैर्य प्राप्त करने की आकांक्षा रखते हुए, ''मानव सेवा ही माधव सेवा'' अर्थात - मानव जीवन का कल्याण (मोक्ष) मानव(माधव) सेवा से ही (मोक्ष) सफल होगा, विश्वास रखते हुए, लोका समस्ता सुखिनो भवंतु।

कमलाकान्त ही समस्त चिंताओं को दूर करने वाला दिव्य औषध है।

रथसप्तमी पर्व

श्रीनिवास का अर्धब्रह्मोत्सव

रूढिवादी संस्कृति में सूर्य भगवान की स्थिति और महिमा अद्वितीय है। वेद, पुराण, इतिहास और काव्य आदि सूर्य की महिमा का उपदेश देते हैं। भगवान सूर्य हमारे लिए प्रत्यक्ष देव हैं। सूर्य के तीन रूपों के स्मरण के साथ गायत्री मंत्र की उपासना सभी बुराइयों को दूर करती हैं। पश्चिमी लोग भी वेदों के सूर्य मंत्रों में सौर ऊर्जा के ज्ञान को पहचान कर रहे हैं और उस पर शोध कर रहे हैं। सूर्य परब्रह्म है, पूरे ब्रह्मांड की आत्मा है, जो हर दिन हमारी आँखों के सामने प्रत्यक्ष रूप से प्रकट होता है। सूर्योपनिषत् 14 के अनुसार सूर्य ही सभी प्राणियों को उत्पन्न करता है। खेलना सूर्य की शक्ति का प्रतिनिधित्व करनेवाले ''अरुण'' मंत्र साधक को सफलता, स्वास्थ्य लाभ और रोग निवारण प्रदान करते हैं।

सूर्य अपने प्रातःकालीन हस्त से समस्त विश्व को अनंत कर्मों के लिए प्रेरित करता है, इसलिए सूर्य को जगचक्षु, कर्मसाक्षी नामों से पुकारा जाता है। हम जो भी शुभ कर्म करते हैं, उनके साक्षी भगवान सूर्य हैं। इसलिए पुराण हमे ये उपदेश देते हैं कि - मनसा, वाचा, कर्मणा (मन से, बातों में और कर्मों में) किए गए सभी कर्म सराहनीय होने चाहिए। इसलिए सभी वैदिक ग्रंथ खुले तौर पर उपदेश देते हैं कि हमे सूर्य से प्रार्थना करनी चाहिए ताकि वह हमें हर समय शुभ कार्य करने का सौभाग्य प्रदान करें। सूर्य काल-चक्र का स्त्रोत है। सूर्य से षड्ऋतुए बनती हैं। समस्त विश्व केलिए कारणभूत होनेवाले सूर्य है परमात्मा है। इसलिए भारतीय सूर्य की पूजा सूर्य गायत्री मंत्र ''ओम आदित्याय विद्महे सहस्रकिरणाय धीमहि, तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्।'' से करते हैं।

''ऐषब्रह्माच विष्णुश्च, शिव स्कंधः प्रजापतिः।
महेन्द्रो धनदःकालो, यमः सोमोह्यापांपतिः।।
ऐन मपत्सु कृच्छेषु, कांतारेषु भयेषुच।
कीर्तयन् पुरुषः कश्चित्, नावसीदति राघव।।''

वाल्मीकी रामायण के युद्धकांड में वशिष्ठ महर्षि द्वारा राम को आदित्यहृदय स्तोत्र सिखाया गया है। ब्रह्म, विष्णु, शिव, सुब्रह्मण्य, इन्द्र, कुबेर, यम और वरुण सभी देव सूर्य हैं। सूर्य को विविध रूपों में आराधना करना है। इसका मतलब जो भगवान सूर्य के विराट रूप का वर्णन करना है। सूर्य की पूजा विभिन्न रूपों में की जाती है। चाहे वह खतरों में फस गया

तेलुगु मूल
श्री बी.करुणाकर रेड्डी
ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष

हो और भटक रहा हो, तो भी यदि मनुष्य सूर्य की प्रार्थना करे तो उनके सभी दुःख दूर हो जाते हैं।

अष्टाक्षरी महामंत्र ''ओम नमो नारायणाय'' का प्रतिदिन सुबह 108 बार जप करने और मन को शुद्ध और एकाग्र रखकर भक्ति से अर्घ्य देने से सूर्य भगवान की कृपा प्राप्त होती है।

रथसप्तमी वह दिन है जब भगवान सूर्य की प्रकाश किरणें पृथ्वी पर प्रचुर मात्रा में होती हैं। इस दिन से सूर्य की दिशा में परिवर्तन प्रारंभ हो जाएगा। भारतीय इसे सूर्य का जन्म दिवस (अवतार उत्सव) मानते हैं। रथसप्तमी के दिन खीर को अर्पित करके फलीदार पत्तों में खाया जाता है। फलीदार और आक देवता पौधे हैं जो अधिक ऊर्जा को अवशोषित करते है, इसलिए इस दिन सूर्य को उनके माध्यम से प्रसाद निवेदन का सेवन करना स्वास्थ्य वर्धक माना जा सकता है।

रथसप्तमी के दिन प्रातःकाल में करनेवाले स्नान-विधि को ऋषियों ने वैज्ञानिक ढंग से बताया है। सुबह स्नान करने से पहले सूर्य का स्मरण करते हुए सात आक के पत्ते, तीन बेर के पत्ते, तीन बेरे के फल और थोडे से चावल सिर पर रखकर स्नान करना चाहिए।

पंचांगों में रथसप्तमी का समापन 'सूर्यजयंती' के रूप में किया जाता है। और इस दिन से सूर्य का प्रकाश उत्तर दिशा में अधिक होगा और सभी तारे आकाश में रथ के रूप में होंगे। इसलिए उन्होंने उपदेश दिया कि सूर्य की पूजा करने से समस्त मानव जाति को सौभाग्य प्राप्त होगा।

सूर्य को बारह नामों से महिमामंडित करना एक लोकप्रिय परंपरा है। ऋषियों ने बताया कि वे नाम सूर्य तक क्यों आए।

1) मित्र : सूर्य संसार के लिए मित्र के समान है। सूर्य दर्शन को प्रकृति में सभी जीव चाहते है। लेकिन शुतुरमुर्ग (कृष्णपक्षी) भी कुछ नफरत करने वालों की तरह, सूरज की रोशनी के बिना जीवन नहीं रह सकते। इसलिए मयूर कवि ने प्रशंसा की कि यदि मनुष्य सूर्य को देखकर अच्छे कर्म करेंगे, तो वे सूर्य के मित्र बन जाएंगे और स्वास्थ्य, अच्छी कविता, बौद्धिक शक्ति, शरीर की रोशनी, दीर्घायु, प्रसिद्धि और धन प्राप्त करेंगे।

2) रवि : रवि की सभी प्रशंसा करते हैं। चतुर्मुखी ब्रह्म को उन्होंने वेदों की शिक्षा दी। सूर्य भगवान जो वेदव्यापक, जिन्होंने नारायण की नाभि से जन्मे ब्रह्म को वेदों की शिक्षा दी।

3) सूर्य : सूर्य सभी प्राणियों को उनके कर्मों के अनुसार निर्देशित कर रहे हैं। प्रेरकत्व और रचनात्मकता सूर्य के अंतर्निहित गुण है।

4) भानु : सूर्य संपूर्ण शरीर को प्रकाश से भर देने वाले हैं। यदि प्राणी उनकी पूजा करते हैं तो वे प्रकाश प्रदान करते हैं।

5) खगु : सूर्य आकाश में उच्च का है। वैकुंठ में प्रसिद्ध भगवान सूर्यनारायण इस संपूर्ण जगत् को शासन करते हैं।

6) पूष : ये अपने प्रकाश से इस संपूर्ण ब्रह्मांड का पोषण करते हैं। अर्थात् उसने इस ब्रह्मांड, प्रकृति की संपत्ति की रचना की और इसके माद्यम से हमारा पोषण करना है। मनुष्य को जीने के लिए चावल की आवश्यकता होती है, यही जीवन का कारण है। वह अन्न के द्वारा ही प्राणियों की वृद्धि करता है और अन्न के द्वारा ही उनका नाश करता है। परंतु वह अपने तेज से उनके वंश का निर्माण और पालन-पोषण करता है।

7) हिरण्यगर्भ : जलप्रलय के दौरान वह जीवित प्राणियों को अपने सुनहरे रंग में लाते है और सभी जीवित प्राणियों को अपने पेट में रखते हैं और जलप्रलय के बाद उन्हें ब्रह्मांड में वापस लाते हैं।

8) मरीचि : मरीचिमान का अर्थ है किरण पुंजों का समूह होना। वह अंधकार और रोग जैसे शत्रुओं को नष्ट करने की क्षमता रखता है। वह शंख-पद्म-चक्र-गदाधर परमात्मा है।

9) आदित्य : सूर्य से संसार को समस्त फल प्राप्त होते हैं। इसका मतलब है कि दुनिया में सब कुछ सूर्य का है। इसका अर्थ यह है कि दुनिया में समस्त सूर्य के अधीन में है। उतना ही नहीं, यह वह पवित्र आकृति है जो हर चीज को प्रकाशित करती है। सूर्य संसार को सभी वस्तुओं को प्रदान करनेवाला दाता है।

10) सवितृ : रवि ने संपूर्ण ब्रह्मांड की रचना की और सभी जीवित प्राणियों का जीवनाधार होनेवाली जीविका को खुशी से प्रदान कर रहे हैं।

11) अर्क : संसार में सबसे पहले जिसकी स्तुति की जाती है, वह सूर्य है। इसीलिए सूर्य नमस्कार समस्त ऐश्वर्य, आरोग्य और अनुभूति का प्रदान करता है।

12) भास्कर : सूर्य की कृपा से हम इस दृश्य जगत में सब कुछ देखते हैं। इसके अलावा सूर्य की पूजा के कारण ही हम ब्रह्मांड की रहस्यमयी बातों को समझ पाते हैं। इतने गहरे अर्थ, अंतरार्थ सहित सूर्य के 12 नाम महिमामय हैं। इन्हें कम से कम रथसप्तमी नाम के सूर्य जयंती पर्व पर याद किया जाना चाहिए।

पुजारी इस माघ सप्तमी उत्सव को कलियुग वैकुंठ तिरुमल पुण्य क्षेत्र में सबसे शानदार तरीके से मनाते हैं। भगवान विष्णु को सात वाहनों पर बैठाकर जुलूस निकालने और चक्रस्नान करने की परंपरा है, यह एक आगम-संप्रदाय है। शिलालेखों में कहा गया है कि यह रथसप्तमी उत्सव सन् 1564 से भगवान विष्णु के लिए अर्धब्रह्मोत्सव के रूप में मनाया जा रहा है।

रथसप्तमी पर सूर्यप्रभावाहन दीर्घायु और स्वास्थ्य प्रदान करता है। लघुशेषवाहन घातक पापों को दूर करता है। गरुड वाहन भक्ति का प्रतीक है। हनुमद्वाहन कार्य में कुशलता प्रदान करता है। कल्पवृक्षवाहन सभी इच्छाओं को पूरा करता है। सर्वभूपालवाहन शक्ति का खजाना देता है। चन्द्रप्रभावाहन आध्यात्मिक, दैविक और भौतिक बाधाओं को दूर करता है। इन वाहनों पर चढ़नेवाले तिरुमल श्रीनिवास ही इन वाहनों को ऐसी शक्ति प्रदान करते हैं। इसलिए जो लोग श्री वेंकटेश्वर स्वामी या श्रीमन्नारायण को अभेद मानते हैं। वे सूर्यनारायण के रूप में परमात्मा को स्तुति कर रहे हैं। आइए देवों के देव विष्णु भगवान को सेवा करें। आइए रथसप्तमी पर्व को मनाएँ और आभारी रहे।

अनुवादक : श्रीमती सी.मंजुला

देवुनिकड़पा, श्री लक्ष्मीवेंकटेश्वरस्वामीजी का

ब्रह्मोत्सव

(दि. 10-02-2024, शनिवार से दि. 18-02-2024, रविवार तक)

दिनांक	वार	दिन	रात
10-02-2024	शनि	तिरुच्चि, ध्वजारोहण	चंद्रप्रभावाहन
11-02-2024	रवि	सूर्यप्रभावाहन	महाशेषवाहन
12-02-2024	सोम	लघुशेषवाहन	सिंहवाहन
13-02-2024	मंगल	कल्पवृक्षवाहन	हनुमन्त वाहन
14-02-2024	बुध	मोतीवितानवाहन	गरुडवाहन
15-02-2024	गुरु	कल्याणोत्सव	गजवाहन
16-02-2024	शुक्र	रथ-यात्रा	धूलिउत्सव
17-02-2024	शनि	सर्वभूपालवाहन	अश्ववाहन
18-02-2024	रवि	वसंतोत्सव, चक्रस्नान	ध्वजावरोहण, हंसवाहन

(गतांक से)

श्री वेंकटाचल की महिमा

(हिंदी गद्यानुवाद)

तृतीय आश्वास

तेलुगु मूल
मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा

हिंदी अनुवाद
आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी

उत्तम आचार्य और सच्छिश्य के लक्षण :

न्याय मार्ग से चलनेवाले, धर्म-अधर्म के बारे में अच्छी जानकारी रखनेवाले पुण्य, सत्कर्म तपोनिष्ठ वाले, अति शांत हृदय रखनेवाले, मन में अहंकार, ममकार, दंभ, दर्प आदि दुर्गुणों को कुचलनेवाले, प्रारब्ध, संचित घोर संसार दावानल से मुक्त रहनेवाले, अवनि में निंदा-स्तुति, मान-अपमान से सर नहीं झुकानेवाले, समस्त भूतों के प्रति दया रखनेवाले, सुहृद्भाव को रखनेवाले, परोपकार गुण रखनेवाले ही महान गुरु हैं। ऐसे आचार्यों के अनुकूल शिष्य कौन है? प्रश्न करने पर तुम सुनो! विश्वास, भक्ति, विनय, शांत स्वभाव आदि कमनीय गुणवाले, सकल मंत्रांतर, साधनांतर में पराण्मुख रहनेवाले, सर्वभार आचार्य के चरणों पर रखकर निश्चल मन से रहनेवाले, सदा पापभीति रखनेवाले, गुरु को ही हरि समझनेवाले, माया को छोड कर शुश्रुषा करनेवाले शिष्य धरती पर अच्छे शिष्य माने जानेवाले हैं।

किसी भी मुमुक्षु को अज्ञान रहित सांसारिक बीज से मुक्त होना चाहिए। उस के नष्ट होने तक भी अहंकार, ममकार आदि भाव दूर नहीं होते हैं। उन्हें छोड देने पर भी देहाभिमान हटता नहीं है। उस के हट जाने पर भी स्वस्वरूप ज्ञान पैदा नहीं होता है। उस के पैदा होने पर भी ऐश्वर्य-भोगापेक्षा मिटती नहीं है। उस के मिट जाने पर भी अर्थ, कामादि राग-द्वेष हटते नहीं हैं। उन के हट जाने पर भी पारतंत्र्य प्रकाश प्राप्त नहीं होता है। उस की प्राप्ति होने पर भी श्रीवैष्णत्व उसे प्राप्त नहीं होता है। उसे प्राप्त करने पर ही सामित्व को परिग्रहण कर पाता है। सात्विक परिग्रहण प्राप्त करने पर भी भागवत परिग्रहण नहीं कर पाता है। भागवत परिग्रहण को प्राप्त करने पर भी अनन्यार्ह प्रयोजक नहीं होता है। अनन्यार्ह प्रयोजक बनने पर भी अनन्यार्ह शेषभूत नहीं बनेगा। अनन्यार्ह शेषभूत बनने के बावजूद अनन्यार्ह शरण्य नहीं बनेगा। अनन्यार्ह शरण्य होने पर भी अधिकार पुरुष नहीं बनेगा। अधिकारी पुरुष बनने के बाद ही अष्टाक्षरी का अधिकारी बनेगा।

ऐसे सच्छिश्यों को आचार्यगण उपदेश दे कर रक्षा करते हैं। यह रीति ऐसी है कि श्रीवैष्णवाचार चिह्नानुसरण के बारे में उपदेश दे कर, उस में करुणा गुण को बढा

कर 'अष्टाक्षरी मंत्र से बढ कर और कोई दूसरा मंत्र नहीं है' बताकर 'नारायण ही सब से महोन्नत हैं, उन से बढ कर कोई और देव नहीं है।' ऐसा बताकर निष्ठा के साथ द्वय, चरम, प्रपत्ति, भक्ति निष्ठाओं के बारे में बताकर, हरि का ध्यान करने की रीति के बारे में बताकर, उस पर विश्वास करने के लिए भरन्यास सुख उसे प्राप्त हो ऐसी व्यवस्था आचार्यगण करते हैं।

ऐसे श्रेष्ठ आचार्य के आश्रय में कामादि भावों को त्याग करके, मन से अहंकार, ममतादि को निकाल कर, विजन स्थलों में विमल गुणों के साथ, मित भोजन करते, मित निद्रा करते, मित संभाषण करते, आचार्य के प्रति भक्ति, यति-शांत गुण रखते, अपरिग्रहण करके, नारायण मूर्ति पर सदा ध्यान रखने के विवेक गुण का अभ्यास करने से मन सदा हरि पर ही केंद्रित रहेगा। ऐसे वैष्णव को ही विष्णु सायुज्य प्राप्त होगा। वे ही धरती पर श्रेष्ठ वैष्णव कहलाते हैं।

वेंकटेश्वर नामक मुझे अत्यंत उत्साह से विविध सेवा-परिचर्या करते हुए, मुझ पर विश्वास करना, फिर आचार्य की सेवा करना निर्मल, श्रद्धावान धर्म ही वैष्णव धर्म है। ''हे भूदवी! इससे अलग वर गुरुओं से अधिक वस्त्र, भूषण अत्यधिक प्रीति से समर्पित करनेवाले, आसक्ति से मेरी आराधना बडे पैमाने पर करनेवाले, देशिक, श्री पाद तीर्थ, प्रसाद उन्नत है, समझकर ग्रहण करनेवाले, दृढ संकल्प से शेषत्व और पारतंत्र्य को जीवात्मा के धर्म के रूप में माननेवाले, राजस, तामस द्वयों को कुचलकर रखनेवाले, सदा सात्विक निष्ठ होकर रहनेवाले, शांत, भूत दया रखनेवाले, सत्य-वाक्य बोलनेवाले ही सच्चे रूप में वैष्णव जन हैं।'' श्री वराहस्वामी के इस रूप में बताने पर सुनकर भूदेवी ने अत्यंत प्रसन्न होकर 'ज्ञान, भक्ति, वैराग्य रखनेवालों को किस प्रकार के कर्म करना चाहिए, बताने केलिए कहा।' तब श्री वराहस्वामी ने कहा।

निष्काम कर्माचरण-ब्रह्म सायुज्य :

ज्ञान, भक्ति, वैराग्य को रखनेवाले लोगों को भी कर्मों को छोडे बिना कर्म करते रहना चाहिए। वही वेदोक्त मार्ग है। वे कर्म कौन है, तो सुनो। स्नान-संध्यादि निज शक्ति के अनुसार करते, सारी इच्छाओं को त्याग करके सब कुछ हरि को समर्पित करते हुए आचरण करने से हरि संतुष्ट होंगे। वही सत्फल है। इसलिए विप्र वेदमार्ग के अनुसार यज्ञ करते रहने से हरि संतुष्ट हो कर उन्हें वांछित फल प्रदान करेंगे। इसलिए सारे आर्य यज्ञ करते हैं। इस प्रकार मेरी आज्ञा को धारण करके निष्काम कर्मों का आचरण करना चाहिए। ऐसे आचरण न करके मेरी आज्ञा का उल्लंघन करनेवाले दोषयुक्त होंगे। इसलिए सद्ब्राह्मण यज्ञादि षठ्कर्मों का आचरण करते, ईश्वर ध्यान में निष्ठावान होकर, भूले बिना नारायण मंत्र का स्मरण करते हुए, संन्यास विधि से कर्म आचरण करके, संपूर्ण ज्ञानोदय प्राप्त करने के बाद विधिवत दंड-कमंडल को छोड कर अवदूत आश्रम को स्वीकार करके, शीतोष्ण सुख-दुखादि द्वन्द्वातीत बन कर सच्चिदानंद से नित्य परिपूर्ण ब्रह्मानंद का अनुसंधान करते रहना चाहिए। ऐसे करनेवालों को ब्रह्म सायुज्य प्राप्त होगा कहते श्री वराहस्वामी ने आगे इस रूप में कहा।

ब्रह्म के द्वैत रूप (ब्रह्म और जीव) :

''हे भूदेवी! ब्रह्म दो प्रकार के होते हैं। वे है 'परा' और 'अपरा'। उन में पर अक्षर और अपर अक्षर रूप होते हैं। 'पर' अक्षर परम ब्रह्म स्वरूपा है। 'अपर' अक्षर जीवात्म स्वरूपा है। 'पर' रूप ही विमल रूपी परमात्मा है। गुरु, पुरुषोत्तम, सर्वपूर्ण भी वे हीं हैं। उस ब्रह्म का अंश ही जीव है। अविद्या से वह ब्रह्म से अलग होता है। वह अपरिमित रूप से शरीरों को प्राप्त करके बहु जन्म लेता है। बहु, मोह, शोक आदि में डूबते, तैरते, अहं को पाल कर बडे बडे कर्म करते जन्म लेता और मरता रहता है। ऐसे जीव अविद्या से दुखी होकर अनेक जन्म लेता रहता

है। ऐसे कुछ जन्मों में अनेक पापकर्म करके फिर बार बार जन्म लेता रहता है। कुछ जन्मों में निष्काम पुण्य कर्म करके ऊर्ध्व गतियों को प्राप्त करता है। साथ ही पुण्य-पाप मिश्रित कर्म करके सुख-दुःखों का अनुभव करते हुए धरती पर जन्म लेता, मरता रहता है। उन में कुछ काम और भोगासक्त होते हैं। और कामवासना से यज्ञ आदि प्रमुख कर्मों से विरत होकर आचरण करके स्वर्ग लोकादि को प्राप्त न करके धरती पर सुख भोग को प्राप्त करके, उन्हीं में लीन रह कर पुण्यों को सदा नाश करते हुए बार बार धरती पर पैदा होकर बार बार आते जाते जन्म-मृत्यु रूपी उसी चक्र में पडा रहता है।

उन में कुछ योगाभ्यास निष्ठ होकर सत्पदों को प्राप्त करते हैं। ''(इन बातों को सुन कर भूदेवी ने कहा।) अत्यंत प्रमुख योग प्रकारों के बारे में हे देव! सत्कृपा से मुझे बताइए भूदेवी की इस प्रार्थना पर संतुष्ट होकर श्री वराहस्वामी ने इस रूप में कहा।''

योगमार्ग का क्रम (अष्टांग योग) :

योगमार्ग के क्रम के बारे में बताना है तो ऐसा है कि गुरूपदेश क्रम से यम, निय, मानस, प्राणयाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारण, समाधि नामक अष्टांग योग का अभ्यास करना चाहिए। उन में 'यम' ऐसा है।

1. यम (दस प्रकार) :

जगत में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, बार्जवम, क्षमा, अतिदया, धृति, मिताहार, शौच यम इस रूप में दस प्रकार हैं। उन का विवरण इस प्रकार है। सकल जीवों को किसी भी प्रकार का क्लेश न हो, ऐसा व्यवहार करना ही अहिंसा है। अवनि में सभी को इष्ट रूप से झूठ न बोलना ही सत्य है, अन्यों के धन में माया करके धोखा देकर प्राप्त न करना ही अस्तेय है। दूसरों की सतियों को मातृ भाव से देखने का धर्म ही ब्रह्मचर्य है। हे सरसिजाक्षी! भूत मैत्री और कुटिलता को छोडना ही वार्जवम है। सहन ही क्षमा है। धैर्य ही धृति है। मित रूप से आहार ग्रहण करना ही मितभोजन है। शौच का मतलब शुद्धि है। 'यम' के ये दस ही प्रकार हैं। फिर 'नियम' कितने प्रकार हैं? पूछने पर।

2. नियम (दस प्रकार) :

नियम के दस प्रकार हैं। योग शास्त्र के प्रति रति, सत्पात्र दान, संतोष, लज्ञा, व्रत, बुद्धि, आस्तिक्य, ईश्वरार्चन नियम के ये दस प्रकार हैं। उदर पोषणार्थ किए जानेवाले वादास्पद शास्त्र को छोडकर मोक्ष प्रदान करनेवाले शास्त्र का अभ्यास करना योगशास्त्र के प्रति रति है। अपने को प्राप्त धन को गुरु और द्विजों के लिए उपयोग करना सत्पात्र दान है। लाभ-नष्ट, शुभ-अशुभ, संयोग-वियोग, मान-अपमान, स्तुति-निंदा, मोद-खेद भावों से परे रहना ही संतोष है। सुजन के सांगत्य से अपने दुर्गुणों से मुक्त न होने पर अपनी निंदा करके, दुर्गुणों को छोड कर सद्गुणों का अभ्यास करना लज्ञा है। अपने संकल्प से किये जानेवाली मोक्ष-साधना को बिना छोडे करना व्रत है। अपने योग-कर्म में रोग, दारिद्र्य, संशय, शास्त्रवाद, रसवाद, दुर्जन सहवास आदि विघ्न होने पर भी विचलित न होना ही बुद्धि है। पुराण-इतिहास आदि सद्ग्रंथों को श्रद्धा से पढ कर सार ग्रहण करना ही आस्तिक्य है। अति तेजोमय ईश्वर स्वरूप को गुरु मुख से सुन कर हृदय में और मन से ध्यान करते हुए पूजा करना ही ईश्वरार्चन है। गुरु वाक्यों को सत्य वाक् के रूप में विश्वास करते हुए नियमों को तोडे बिना कष्टों को झेलते हुए करना ही तप है। गुरु के द्वारा बताये मंत्र को निश्चल मन से बिना छोडे जप करना ही जप है। ये दस ही नियम हैं। ऐसे यम, नियम दोनों अंतःशुद्धिप्रद हैं। इसलिए इन का अभ्यास करके अंतःशुद्धि को प्राप्त करके कीटादि जंतुओं से मुक्त विजन स्थल में अपने लिए अनुकूल सुखासन का निर्माण करके उस पर आसनों का अभ्यास करना चाहिए। आसन करने का विधान इस प्रकार है।

क्रमशः

वसंत पंचमी

- डॉ.जी.मोहन नायुडु

वसंत पंचमी हिंदुओं का प्रमुख त्योहार है। हिंदू पंचांग के अनुसार माघ माह के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को वसंत पंचमी के नाम से अभिहित किया जाता है। वसंत पंचमी तिथि के बाद से ही वसंत ऋतु का आरंभ होता है। समस्त (छह) ऋतुओं में वसंत को ऋतुराज कहते हैं। वसंत पंचमी के दिन विद्या, बुद्धि, ज्ञान और कला की देवी सरस्वती की पूजा की जाती है। वसंत पंचमी के दिन पूजा में भाग लेनेवाले भक्त पीले वस्त्र धारण करते हैं। पुराण, शास्त्र और काव्यों में अपने-अपने ढंग से इसका वर्णन मिलता है।

उपनिषदों की कथा के अनुसार सृष्टि के आरंभिक काल में भगवान शिव की आज्ञा से ब्रह्म ने जीवों, खासकर मनुष्य योनि की रचना की। लेकिन अपने इस सृजन से वे संतुष्ट नहीं थे और उन्हें लगता था कि कुछ कमी रह गयी है। ब्रह्म ने इस समस्या का समाधान के लिए अपने कमंडल से जल हथेली में लेकर संकल्प स्वरूप उस जल को छिडकाकर भगवान विष्णु की स्तुति करने लगे। तब भगवान विष्णु ने उनके सामने तुरंत प्रकट होकर ब्रह्म द्वारा समस्या सुनकर आदिशक्ति दुर्गा माता का आवाहन किया। जब देवी दुर्गा तुरंत प्रकट हुई तब ब्रह्म और विष्णु ने माँ दुर्गा से इस संकट को दूर करने के लिए विनती की। ब्रह्म और विष्णु की विनती के तुरंत बाद उसी क्षण आदिशक्ति दुर्गा माता के शरीर से श्वेत रंग का एक भारी तेज उत्पन्न हुआ जो एक दिव्य नारी के रूप में बदल गया। यह स्वरूप एक सुंदर स्त्री का था जिनके एक हाथ में वीणा तथा दूसरे हाथ में वर मुद्रा थी। अन्य दोनों हाथों में पुस्तक एवं माला थी। आदिशक्ति दुर्गा माँ के शरीर से उत्पन्न उस देवी ने वीणा का मधुरनाद किया जिससे संसार के समस्त जीव-जन्तुओं को वाणी प्राप्त हुई। जलधारा में कोलाहल की ध्वनि उत्पन्न हुई। पवन चलने से सरसराहट ध्वनि होने लगी। तब सभी देवताओं ने शब्द और रस का संचार कर देनेवाली उस देवी को वाणी की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती नाम दिया। इसके बाद आदिशक्ति दुर्गा माँ ने ब्रह्म से कहा कि मेरे तेज से उत्पन्न हुई यह देवी सरस्वती आपकी पत्नी बनेगी। जिस प्रकार लक्ष्मीजी भगवान विष्णु की शक्ति है, पार्वतीजी महादेव शिव की शक्ति है उसी प्रकार सरस्वती देवी आपकी शक्ति होगी। इस प्रकार कहकर आदिशक्ति दुर्गा माँ तब देवताओं के देखते-देखते वहीं अंतर्धान (अदृश्य) हो गयी। इसके बाद सभी देवता सृष्टि के संचालन में लगे हुए थे।

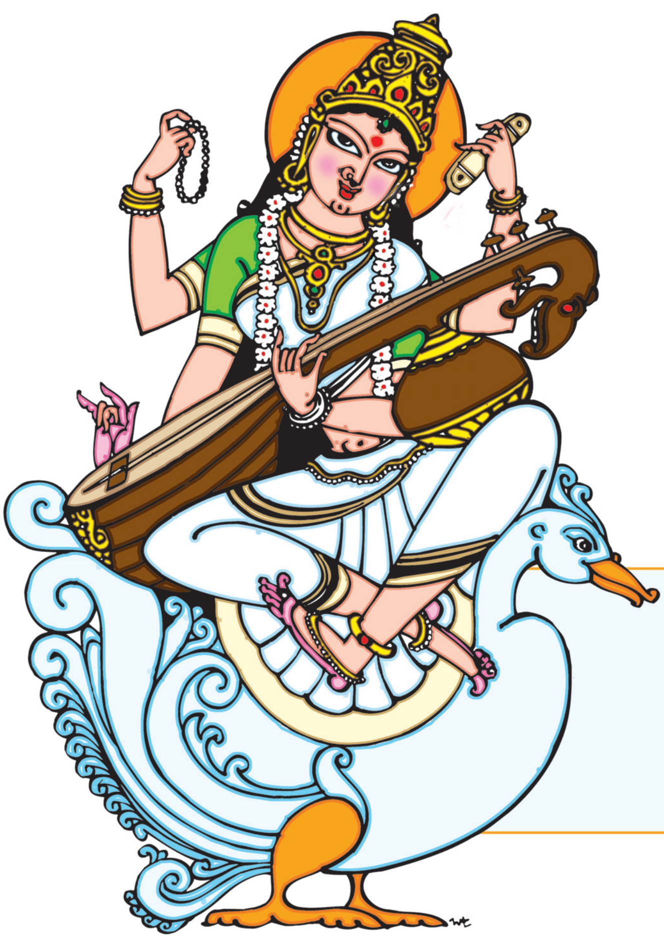

सरस्वती को भगवती, वागीश्वरी, वाग्देवी, वीणावादनी और शारदा आदि नामों से हम पूजा करते हैं। देवी सरस्वती विद्या और बुद्धि प्रदाता है। संगीत की उत्पत्ति करने के कारण ये संगीत की देवी भी हैं। वसंत पंचमी को विशेष रूप से सरस्वती जयंती के रूप में भी मनाया जाता है। ऋग्वेद में सरस्वती का वर्णन इस प्रकार किया गया है-

ॐ प्रणो देवी सरस्वती
वाजेभिर्वाजिनीवती धीनामवित्र्यवतु।

अर्थात् ये परम चेतना हैं। सरस्वती के रूप में ये हमारी बुद्धि, प्रज्ञा एवं मनोवृत्तियों की संरक्षिका हैं। हमारे अंदर जो विचार और मेधाशक्ति है उसका आधार देवी सरस्वती ही हैं। इनकी समृद्धि एवं स्वरूप का वैभव अद्भुत है। पुराणों के अनुसार श्रीकृष्ण ने सरस्वती से प्रसन्न होकर उन्हें वरदान दिया था कि वसंत पंचमी के दिन तुम्हारी भी आराधना की जाएगी। इस वरदान के फलस्वरूप भारत में वसंत पंचमी के दिन विद्या-देवी सरस्वती की भी पूजा होने लगी जो आज तक वह परंपरा चली आ रही है।

वसंत ऋतु का महत्व

वसंत पंचमी त्योहार का हिंदू धर्म में विशेष महत्व होता है। हिंदू पंचांग के अनुसार माघ माह के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को वसंत पंचमी का त्योहार मनाया जाता है। वसंत पंचमी तिथि के बाद से ही वसंत ऋतु का आरंभ होता है। वसंत पंचमी के दिन विद्या देवी सरस्वती की पूजा होती है। यह भी मान्यता है कि बच्चे की जिह्वा पर शहद से 'ॐ' बनाने से बच्चा ज्ञानी बनता है। अतः विशेष रूप से विद्यालयों में सरस्वती की पूजा बहुत धूम धाम से होती है। क्योंकि उसी तिथि पर देवी सरस्वती का जन्म हुआ था। उस दिन पीले वस्त्र पहनने का विशेष महत्व होता है। मुहूर्त शास्त्र में वसंत पंचमी की तिथि को अबूझ मुहूर्त माना जाता है, जिसमें किसी भी शुभ कार्य करने में मुहूर्त का विचार नहीं करते। कई तरह के शुभ कार्य करने के लिए वसंत पंचमी सर्वश्रेष्ठ माना गया है। वसंत पंचमी का यह अबूझ मुहूर्त विद्यारंभ, विवाह, गृह प्रवेश, नई वस्तु खरीदने के लिए सबसे अच्छा माना जाता है। प्रकृति के इस उत्सव के बारे में कालिदास ने कहा कि ''सर्वप्रिये चारुतर वसंत''। गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने ''ऋतूनां कुसुमाकराः'' अर्थात् मैं ऋतुओं में वसंत हूँ कहकर वसंत को अपना स्वरूप बताया। वसंत पंचमी के दिन ही कामदेव और रति ने पहली बार मानव हृदय में प्रेम एवं आकर्षण का भाव संचार किया।

सरस्वती पूजा का विधान

माघ माह के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को वसंत पंचमी का त्योहार मनाया जाता है। वसंत पंचमी के दिन ज्ञान, वाणी और संगीत की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती की पूजा और अर्चना की जाती है। सत्वगुण से उत्पन्न होने के कारण उनकी पूजा में प्रयोग की जानेवाली सामग्री में अधिकांशतः श्वेत या पीले वर्ण की होती है। जैसे श्वेत चन्दन, श्वेत वस्त्र या पीले वस्त्र, फूल, दही, मक्खन, सफेद तिल का लड्डू, अक्षत, नारियल, श्रीफल, बेर इत्यादि। वसंत पंचमी के दिन सुबह ही स्नान के बाद श्वेत अथवा पीले वस्त्र धारण कर विधिपूर्वक कलश स्थापन करते हैं। फूल माला के साथ माँ सरस्वती को सिंदूर एवं अन्य श्रृंगार की वस्तुएँ भी समर्पित करते हैं तथा उनके चरणों पर गुलाल भी अर्पित करने की परंपरा है। माँ सरस्वती के प्रसाद में पीले रंग की मिठाई या खीर का भोग चढ़ाते हैं। यथा शक्ति के निमित्त ''ॐ ऐं सरस्वत्यै नमः'' का मंत्र जप करते हैं। सरस्वती का बीजमंत्र ''ऐं'' का उच्चारण करते हैं, जिसके उच्चारण से बुद्धि विकसित होती है।

(गतांक से)

तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर

(तिरुपति बालाजी)

हिन्दी अनुवाद - प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव
प्रो.गोपाल शर्मा

द्वितीय प्राकार, जो विमान प्रदक्षिणा की चारों ओर है, उसकी दोनों ओर यानी बाहर और अंदर की ओर (संपंगि प्रदक्षिणम्) अधिक संख्या में शिलालेख हैं। ये प्रथम विजयनगर राजा सालुव नरसिंह के समय के हैं। कुछ श्रीकृष्णदेवराय और अच्युतदेवराय के समय के भी इनमें हैं। ये राजा संगम वंश के थे। अधिक लेख सदाशिवराय और आरवीडु राजाओं के हैं। आरवीडु राजाओं में प्रधानतः वेंकटपतिराय का नाम उल्लेखनीय हैं। ये लेख तीसरे प्राकार के दीवारों की दोनों ओर देखे जा सकते हैं।

प्रथम दो उन्नत प्राकारों का निर्माण यादव राजाओं के समय में प्रधानतः संपन्न हुआ था। इनमें प्रथम उल्लेखनीय राजा वीरनरसिंह यादवराय हैं। ये इस प्रान्त के शक्तिशाली और प्रभावशाली राजा थे। इन के आराध्य देव श्री वेंकटेश्वर भगवान ही हैं। श्री वेंकटेश्वर के प्रति उनकी प्रतिबद्धता ने उनसे पहले के पुरालेखों को पुनः रचित कराने के लिए प्रेरित किया है। इन लोगों ने अपने पूर्व शासक और विजयनगर राजवंश के लेखों को भी इसी प्रकार सुरक्षित रखा।

लगता है कि कुछ समय बाद पूर्व दिशा में इन दोनों प्राकारों को कुछ विस्तृत किया गया है। शायद यह कार्य मुखद्वार या महाद्वार पर शिखर (गोपुर) निर्माण के संदर्भ में हुआ होगा। उस समय पूर्व लिखित लेख, जो प्रधान प्राकार के द्वार के अगल-बगल में थे, कुछ को निकालना पडा हो। उस संदर्भ में उल्लिखित लेखों को कुछ क्षति पहुँची होगी।

विमान प्रदक्षिणा के पास के द्वितीय प्राकार से सटकर ही मंदिर की पाकशाला, लंबा मंटप है। मंटप के साथ ही जुडी हुई है यागशाला। साथ-साथ उसकी पश्चिम दिशा में कुछ अन्य कमरे भी हैं। कल्याण-मण्टप *, हरे खम्भों से युक्त है। ये चार खंभे बहुत ही सुंदर, कुछ हल्के ताडन से

---

* इस मंटप में कुछ वर्ष पहले तक श्री मलयप्पस्वामी वेंकटेश्वर का कल्याणोत्सव मनाया जाता था। श्रीदेवी और भूदेवी के साथ भक्ति प्रपत्ति सहित भक्तों की ओर से संपन्न होनेवाला उत्सव ही 'कल्याणोत्सव' है। यहाँ संपन्न होने के कारण ही इसे 'कल्याण-मंटप' कहा गया है। आजकल कल्याणोत्सव उसकी दक्षिण दिशा में स्थित 'रंगनायकुल मंटप' में संपन्न किया जा रहा है।

सुरीले संगीत को निसृत करनेवाले हैं। उत्तरी दिशा के अंत में श्री वेंकटेश्वर की उत्सवमूर्तियों को रखने का कमरा भी है। ये मूर्तियाँ उस समय ब्रह्मोत्सवों, दीपावली उत्सव आदि के समय, बाहर लायी जाती थीं। फिर अभिषेकम तथा नैवेद्य (प्रसाद, पण्यारम्) के पश्चात् पुनः वहीं सुरक्षित रखी जाती थी। आस्थानम् और अन्य पारंपरिक उत्सवों में भी इसी प्रकार संपन्न होता है। कुछ विशेष पर्व तथा उच्च अधिकारियों के समक्ष होनेवाले उत्सव 'तिरुमामणिमंटप' में भी चलते थे। उन समयों में श्रीराम और अन्य परिवार देवताओं की मूर्तियाँ यागशाला में रखी जाती थीं। श्री वेंकटेश्वर भगवान की मूलविराट मूर्ति के पास ही श्री भोगश्रीनिवासमूर्ति और श्री उग्रश्रीनिवासमूर्ति गर्भालय में ही रहती हैं।

[पाकशाला के मुखद्वार के पास ही कुछ हठ कर वकुलमालिका की मूर्ति है। ये श्री वेंकटेश्वर की पोषिता माता है। पहले ये वराहस्वामी के पास रहती थीं। श्री वराहस्वामी ने ही वकुलमालिका को श्री वेंकटेश्वर भगवान की सेवा में नियुक्त किया था। उपयुक्त रूप में उनकी मूर्ति पाकशाला में स्थापित है। पूर्व जन्म में वकुलमालिका ही यशोदा माता थीं। श्रीकृष्णावतार में उन्होंने श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं का आनंद लिया था, अन्य कार्य नहीं देखे। इसीलिए आगे के जन्म में वे वेंकटेश्वर की पोषिता माता पुनः बनी हैं।]

इसी प्रकार कुछ कमरे और ऊँचे ऊँचे मंच पश्चिम और उत्तर दिशाओं में द्वितीय प्राकार से सटकर निर्मित किये गये हैं। उत्तर दिशा में विमान प्रदक्षिणम् के पास ही विविध उपयोगों को दृष्टि में रखकर कमरों का निर्माण हुआ है। प्रधानतः वाहनों (गरुड, गज, अश्व, तिरुच्चि आदि) की सुरक्षा के लिए; पुस्तकें, दस्तावेजों को रखने के लिए; रिकार्ड्स को रखने के लिए; प्रसाद (पण्यारम्) भण्डागार (लड्डू, वडा आदि को रखने के लिए); सामग्री रखने के लिए (घी आदि); मूर्तियों की सजावट के लिए काम में आनेवाले पदार्थ, वस्त्र (सभा अर) आदि को रखने के लिए; चंदन घिसने के लिए; कर्पूर आदि-आदि को पीस कर पूजादि में उपयोग करने के लिए; आदि आदि को दृष्टि में रखकर पश्चिम और उत्तर प्राकार के साथ अनेक कमरों का निर्माण किया गया है। इस प्राकार के साथ वैष्णव आचार्य रामानुज और श्री योगनरसिंह स्वामी के मंदिर भी हैं। इसी प्राकार के साथ अन्नमाचार्य के संकीर्तनों को सुरक्षित रखने का एक कक्ष भी है। इसमें अन्नमाचार्य के लगभग 3,000 ताम्रपत्रों में लिखित 18,000 संकीर्तन (गीत/पद) सुरक्षित मिले हैं। उनके साथ-साथ ताल्लपाका अन्नमाचार्य के पुत्र पेद्दतिरुमलाचार्य और पौत्र चिन्नतिरुमलाचार्य के पद भी प्राप्त हुए हैं। वैसे तो ताल्लपाका के वंश ने भगवान के लिए अपने को समर्पित किया है। उनके सब गीत भगवान श्री वेंकटेश्वर पर ही हैं। ''अन्नमाचार्य के जीवन चरित'' में उनके पौत्र चिन्नतिरुमलाचार्य ने स्पष्ट घोषित किया है कि अन्नमाचार्य ने 32,000 संकीर्तन (पद) लिखकर भगवान को अर्पित किया है (देवस्थानम् एपिग्राफिकल रिपोर्ट, पृ-2, 279-302)। ये तिरुमल मंदिर के संकीर्तनाचार्य हैं। अब भी इनकी परंपरा चल रही है।

जिस प्रकार ''संपंगि प्राकारम्'' में अनेक मूल्यवान स्थल और कमरे हैं उसी प्रकार दोनों बडे प्राकारों की दीवारों के बीच मुक्त मंटप में कुछ ऊँचे आसन पर विजयनगर साम्राट श्रीकृष्णदेवराय और उनकी दो रानियों की ताम्र मूर्तियाँ हैं। तिरुमलदेवी और चिन्नादेवी श्रीकृष्णदेवराय की रानियाँ हैं। उसी प्राकार के दक्षिण भाग में आरवीडु वंश के राजा वेंकटपति राय महाराज-1 तथा अच्युतराय महाराज एवं उनकी पत्नी वरदाजी अम्मन की ताम्र मूर्तियाँ भी हैं। श्रीकृष्णदेवराय, तिरुमलदेवी, चिन्नादेवी और वेंकटपतिदेव के नाम ताम्र मूर्ति की भुजाओं पर अंकित हैं। लेकिन अच्युतराय और वरदाजी अम्मन के नाम इस प्रकार अंकित नहीं हैं। इसीलिए पुरालेखविद् (एपिग्राफिस्ट) ने अनुमान लगाया है कि वे वेंकटपति देवराय के पिताजी और माताजी से संबंधित हैं। उनके नाम हैं - तिरुमल देवराय और वेंकटांबा। (आर्कियलाजिकल सर्वे रिपोर्ट-1911-1912, 189, पादटिप्पणी 3 (फुटनोट))। मैंने उसी निर्णय को तिरुपति देवस्थानम् एपिग्राफिकल रिपोर्ट में दी है (फोटोग्राफ्स

संख्या. 53)। आश्चर्य की बात यह है कि प्राचीन ''दिट्टम्'' में (एक प्रकार का लिखित आदेश) (इन मूर्तियों को निवेदन (नैवेद्य) चढाने की बात स्पष्ट उल्लिखित है। इस ''दिट्टम्'' में तिरुमलराय की मूर्ति के होने की बात है लेकिन मूर्ति अप्राप्य है।) इसके बाद मैं ने अपनी रिपोर्ट में संशोधन किया है। उसकी सूचना दी है। लेकिन रिपोर्ट में परिवर्तन अंकित नहीं है। अगर देवस्थानम् अधिकारी कुछ ध्यान देकर इन्हें सुधारने का प्रयास करेंगे तो अच्छा होगा।]

[श्रीकृष्णदेवराय और उनकी रानियाँ भक्ति प्रदर्शित करती हुई, हाथ जोडकर भगवान की वंदना करती मिलती हैं। इसका उल्लेख 'रायवाचकम्' में भी मिलता है। 'रायवाचकम्' राज परिवार पर लिखी गयी 'वचनिका' है। (मद्रास विश्वविद्यालय के प्रकाशन 'सोर्सेस ऑफ विजयनगर हिस्टरी' में भी इसके साक्ष्य मिलते हैं।) ये प्रतिमा रूप भगवान के प्रति श्रीकृष्णदेवराय की भक्ति के सूचक हैं। यह भी सूचित है कि श्री वेंकटेश्वर की उत्सवमूर्तियाँ उनके सामने लायी जाती हैं ताकि भगवान उनको आशीर्वाद दें। मूर्तियों की स्थापना 2 जनवरी, 1517 को हुई है। उसी दिन पर या दो दिन पहले श्रीकृष्णदेवराय ने भगवान के सामने अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किये होंगे। यहीं से कृष्णदेवराय ने अपनी कुंभकोणम् की तीर्थ यात्रा आरंभ की थी। कुंभकोणम् में महामह उत्सव (मामगम् उत्सव) में भाग लेने वे गये थे। यह उत्सव 6 फरवरी, 1517 को मनाया गया है। (तिरुपति देवस्थानम् एपिग्राफिकल रिपोर्ट, पृ 186, नोट-2)। ये तीनों मूर्तियाँ स्वयं श्री कृष्णदेवराय के पर्यवेक्षण में स्थापित हुई हैं, इसलिए यह भी संभव है कि मूर्तियों के सामनेवाले मंटप का भी शुभारंभ उन्होंने ही किया हो। इस रंगमंटप में श्रीरंगम् के श्रीरंगनाथ स्वामी की उत्सवमूर्ति भी रही होगी। श्रीरंगम् तमिलनाडु के तिरुच्चिनापल्लि जिले में है। यह मूर्ति पाँच-छः दशाब्दियों तक वहाँ रही। जब श्रीरंगम् पर मुसलमानों के आक्रमण हुए थे, तब श्रीरंगनाथ की मूर्ति यहाँ लायी गयी। मालिक कफूर का आक्रमण सन् 1310 में और मुहम्मद बीन तुगलक के आक्रमण बाद में हुए थे। भगवान की मूर्ति छिपा कर यहाँ लायी गयी। मैसूर राज्य से होती हुई मूर्ति यहाँ पहुँची। बाद में विजयनगर साम्राज्य के साम्राट बुक्कराय-I के सुपुत्र कुमार कंपना-II के द्वारा मदुरै के सुलतान शासन को परास्त किया गया तब उनके सेनापति सालुव मंगिदेव और गोप्पना आदि ने 14वीं शती में रंगनाथ की उत्सवमूर्ति को पुनः श्री वेंकटेश्वर के मंदिर से ''सेंजी'' (चेंजी) और वहाँ से कुछ ही समय बाद श्रीरंगम् पहुँचायी। रंगनाथ की मूर्ति श्रीरंगम् के मंदिर में पुनः स्थापित हुई। (तिरुपति देवस्थानम् एपिग्राफिकल रिपोर्ट, पृ.131)]

रंगमण्टप, पत्थर से बने बडे बडे खंभों से सुशोभित हैं। इन खंभों पर सुंदर और आकर्षक शिल्पकला का विन्यास मिलता है। इस मंटप के दक्षिणी भाग में सुवर्ण शेष वाहन रखा हुआ है। कुछ वर्षों से यहाँ अन्य वाहन भी रखे जा रहे हैं। यहाँ 'कल्याण-उत्सव' भी मनाया जाता था। (आजकल कल्याणोत्सव यहाँ नहीं मनाया जाता है।)। रंगनायक मंटप के आंगन प्रान्त में मंदिर का एक छोटा कार्यालय है। यहाँ पर कुछ सेवाओं से संबन्धित टिकट बेची जाती हैं। आरंभ में यह कार्यालय महामणि-मंटप के पास था। (आजकल यह कार्यालय यहाँ नहीं है। अन्यत्र व्यवस्थित है।)

क्रमशः

मार्च 2024

01-10 तिरुपति
श्री कपिलेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
08 महाशिवरात्रि
17-25 तरिगोंडा
श्री लक्ष्मीनरसिंहस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
20-24 तिरुमल श्री बालाजी का प्लवोत्सव
24 होली
25 श्री लक्ष्मीजयंती,
श्री तुंबुरु तीर्थमुक्कोटी

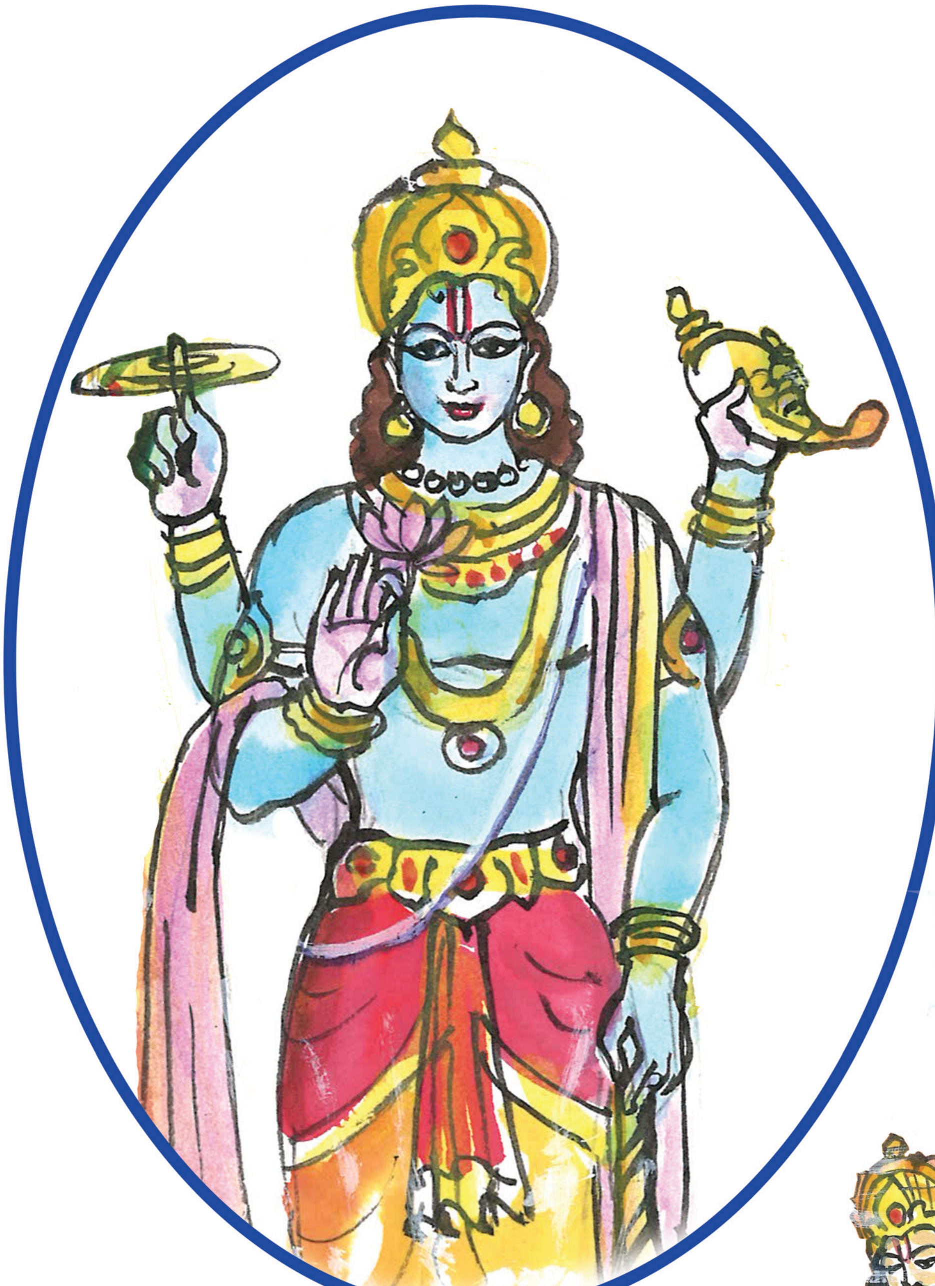

भीष्म एकादशी

- श्री सी:सुधाकर रेड्डी

माघ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि को जया एकादशी के नाम से जाना जाता है। जया एकादशी व्रत को भीष्म एकादशी या भूमि एकादशी के नाम से भी जाना जाता है। पद्म पुराण में बताया गया है कि इस एकादशी के व्रत से अमोघ फल की प्राप्ति होती है और सभी पाप धुल जाते हैं। यह पर्व (अधिक मास समय) जनवरी या फरवरी में आता है।

एकादशी का अर्थ

एकादशी भगवान विष्णु या श्रीकृष्ण के सम्मान में हिन्दू भक्तों द्वारा मनाया जानेवाला एक लोकप्रिय धार्मिक व्रत है। हिन्दू कैलेंडर के अनुसार सौरमान-चांद्रमान के रूप में है। एकादशी प्रत्येक चन्द्रमा चक्र में क्रमशः कृष्ण पक्ष या घटते चन्द्रमा चरण और शुक्ल पक्ष या बढते चन्द्रमा चरण का ग्यारहवां दिन है।

एकादशी का जन्म

बहुत कम ही लोग जानते है कि एकादशी एक देवी थी, जिनका जन्म भगवान विष्णु से हुआ था। एकादशी मार्गशीर्ष मास की कृष्ण एकादशी को प्रकट हुई थीं, जिसके कारण इस एकादशी का नाम उत्पन्ना एकादशी पड़ा। इसी दिन से एकादशी व्रत शुरू हुआ था। ऐसा माना जाता है कि स्वयं श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर को एकादशी माता के जन्म कथा सुनाई।

एकादशी जन्म वृत्तान्त की कहानी

सतयुग के समय मुर नाम का राक्षस था। जिसने इन्द्र सहित सभी देवताओं को जीत लिया। भयभीत देवता भगवान शिव से मिले तो शिवजी ने देवताओं को विष्णु भगवान के पास जाने को कहा। क्षीरसागर के जल में शयन कर रहे श्रीहरि इन्द्र सहित सभी देवताओं की प्रार्थना पर उठे और मुर दैत्य को मारने चन्द्रावतीपुरी नगर गए। सुदर्शन चक्र से उन्होंने अनगिनत दैत्यों का वध किया। फिर वे बद्रिका आश्रम की सिंहावती नामक 12 योजन लंबी गुफा में सो गए। मुर ने उन्हें जैसे ही मारने का विचार किया, वैसे ही विष्णु के शरीर से एक कन्या निकली और उसने मुर दैत्य का वध कर दिया।

जागने पर श्रीहरि को उस कन्या ने, जिसका नाम एकादशी था, बताया कि मुर को श्रीहरि के आशीर्वाद से उसने ही मारा है। खुश होकर श्रीहरि ने एकादशी को सभी तीर्थों में प्रधान होने का वरदान दिया। इस तरह श्रीविष्णु के शरीर से माता एकादशी के उद्भव होने की यह कथा पुराणों में वर्णित है।

व्रत की विशेषता

इस व्रत में भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी की पूजा करने से सुख-समृद्धि प्राप्ति होती है और हर कार्य में सफलता प्राप्त होती है। माघ माह की इस एकादशी के दिन पवित्र नदियों में स्नान करने और दान पुण्य करने से वैकुंठ लोक की प्राप्ति होती है। इस एकादशी का महत्व, पूजा विधि और शुभ योग के बारे में जानते हैं।

जया एकादशी का महत्व

जया एकादशी के दिन लक्ष्मी नारायण का व्रत करने से सभी मनोकामनाएँ पूरी होती है और आरोग्य की प्राप्ति होती है। साथ ही मनुष्य को पृथ्वी लोक के सभी सुख-सुविधाओं को भोगकर अंत में वैकुंठ धाम की प्राप्ति करता है। जैसा कि इस एकादशी के नाम से पता चल रहा है, यह व्रत सभी कार्यों में विजय दिलाता है और बेहद कल्याणकारी माना गया है। इस व्रत में शंख, चक्र और गदाधरी भगवान विष्णु के स्वरूप की पूजा की जाती है। इस व्रत में दान करने का फल संपूर्ण यज्ञों के बराबर प्राप्त होता है। यह व्रत करने से आपके आसपास सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह बनाता है और पिशाचत्व का भी अंत करता है।

जया एकादशी पर शुभयोग

जया एकादशी पर कई शुभ योग बन रहे है, जिससे इस दिन का महत्व और भी बढ़ जाता है। इस तिथि पर सर्वार्थ सिद्धि नामक महायोग बन रहा है। शास्त्रों में बताया गया है कि इस शुभ योग में भगवान विष्णु के साथ माता लक्ष्मी की पूजा करने से शुभ फल प्राप्त होते हैं। साथ ही इस योग में किए गए कोई भी शुभ कार्य निश्चित ही सफल होता है। जया एकादशी को दक्षिण में 'भूमि एकादशी' और 'भीष्म एकादशी' के नाम से जाना जाता है।

कामिका एकादशी के बारे में सबसे पहले भीष्म ने नारदजी को बताया था। फिर इस कथा को श्रीकृष्ण ने अर्जुन को सुनाई थी। इस कथा में पितामह ने श्रावण महीने की एकादशी पर भगवान विष्णु की पूजा का विधान और उसके पुण्य के बारे में बताया गया।

भीष्म को एक वरदान दिया गया था जिसकी सहायता से उन्हें अपनी मृत्यु का समय स्वयं चुनना होगा। लोगों ने कहा था कि भीष्म ने अपने नश्वर शरीर को त्यागने के लिए जया एकादशी का दिन चुना और तभी से जया एकादशी को भीष्म एकादशी का नाम दिया गया।

जया एकादशी के पीछे की कहानी

युधिष्ठिर (महाभारत के पांडव भाइयों में सबसे बडे) भगवान श्रीकृष्ण से जया एकादशी या भीष्म एकादशी के महत्व और कहानी के बारे में पूछते हैं। भगवान श्रीकृष्ण ने प्रेमपूर्वक कहानी सुनाई जो 'माल्यवान और पुष्पदंत' की एक दिलचस्प कहानी है। भगवान इन्द्र के दिव्य देश में जहाँ सभी देवता सौभाग्य और संतुष्ट रहते थे, इन्द्र नंदना वन के अंदर अमृत (देवताओं का पेय) पीने का आनंद लेते थे। अद्भुत फूलों के साथ ऐसे ही एक अवसर पर जब भगवान इन्द्र को पचास करोड अप्सराओं के गायन और नृत्य द्वारा सेवा दी जा रही थी, तो उनमें से एक अप्सरा सुन्दर और छोटे माल्यवान पर मंत्रमुग्ध हो गई। माल्यवान चित्रसेन का पुत्र हुआ, जो इन्द्र का प्रमुख संगीतज्ञ था।

माल्यवान भी पुष्पदंत की ओर आकर्षित हो गया और उसकी सुन्दरता पर मोहित हो गया। दोनों एक दूसरे में इतने खो गए कि वासना की भावना उन पर हावी हो गई। वे गीत बनाकर और नृत्य करके भगवान इन्द्र का मनोरंजन करने आए थे। लेकिन वे एक-दूसरे में इतने खो गए कि इसका परिणाम यह हुआ कि माल्यवान जो गा रहा था। उसके बोले भूल गया और अप्सरा पुष्पदंत लय से बाहर नृत्य करने लगी। भगवान इन्द्र ने यह देखा और समझ गए कि क्या हुआ, माल्यवान और पुष्पदंत दोनों को कामदेव के बाण से चोर लगी थी। इन्द्र को उनके व्यवहार से अपमानित और क्रोधित महसूस हुआ, इतना कि उन्होंने उन दोनों को 'पिशाचा' की जीवन शैली जीने और ग्रह पर उस देश में पति और पत्नी के रूप में रहने का शाप दिया।

जैसा ही भगवान इंद्र का शाप सुना गया, माल्यवान और पुष्पदंत ने खुद को स्वर्गीय नंदना वन क्षेत्र से हिमालय पर्वत पर कहीं उतरते हुए पाया। उन्होंने अपनी दिव्यबुद्धि और जानकारी खोदी और गंध, स्पर्श और स्वाद की अनुभूति से वंचित रह गए। उन दोनों को हिमालय की बर्फ और ठंड में निराशा महसूस हुई और वे बेहद तापमान से परेशान होकर एक जगह से दूसरी जगह घूमते रहे और हालांकि उन्होंने गुफाओं में शरण ली, लेकिन बर्फ गिरने से उन पर बुरा असर पडा। उदास हालत में, बकबक करते तागचीनी और कांपते शरीर वाले माल्यवान और पुष्पदंत को आश्चर्य हुआ कि उन्होंने कौन से जघन्य पाप किया है जो वे इस अत्यधिक ठंड वातावरण में, पिशाच प्रेम में थे? उन्हें पता चला कि पाप करने से केवल नाटकीय दंड ही मिल सकता है, जो उन्हें अब भुगतना पड रहा है। हालाँकि, दोनों प्रशंसक बर्फ के अंदर इधर-उधर घूमते रहे, उसके पास न तो खाने के लिए कुछ न था और नहीं उन्होंने पानी पिया।

हालाँकि, सौभाग्य माल्यवान और पुष्पदंत के पक्ष में था क्योंकि वह दिन शुभ जया एकादशी था। यह दिन भगवान विष्णु का पसंदीदा दिन है और जो कोई भी एकादशी का व्रत रखता है, वह भगवान के निवास में, उनके कमल चरणों के करीब एक स्थान अर्जित करता है। पिशाच रूप में प्रेम में डूबे इस जोडे ने, भगवान इन्द्र के कठोर शाप की वजह से, एक पीपल पेड के नीचे बिना नींद की रात बिताई। खून की कमी से स्तब्ध और जब कि यह असहनीय हो गया है, वे ठंडी स्थिति में हर अंतर के शरीर की गर्मी के लिए एक-दूसरे को गले लगा रहे है।

अगली सुबह (द्वादशी) एक चमत्कार फैल गया है। माल्यवान और पुष्पदंत ने पाया कि वे अपने पिशाचा

आकार से बड़े नही थे, वे समृद्ध पोशाक और भव्य आभूषणों में अपने मूल सुन्दर रूपों में लौट आए है। यह चमत्कार तब हुआ जब माल्यवान और पुष्पदंत ने बिना समझे जया एकादशी का पूरा व्रत कर लिया। न केवल तेज, बल्कि अत्यधिक ठंड की स्थिति के कारण वे उस रात सोने भी नहीं थे। जया एकादशी के व्रत के पुण्य से उनके पाप नष्ट हो गए और वे यंत्रवत् अपने प्रामाणिक रूप में बदल हो गए।

माल्यवान और पुष्पदंत शीघ्र ही भगवान इन्द्र के देश की राजधानी अमरावती पहुँच गए। भगवान इन्द्र उस जोडे को देखकर आश्चर्यचकित हो गए, जिसे उन्होंने शाप दिया था, फिर से उनके दिव्य आकार में उनके सामने। भगवान इन्द्र ने उनसे पूछा कि वे इतनी जल्दी शाप से कैसे मुक्त होगए और उन्हें पिशाचा होने से किसने बचाया? दंपति द्वारा भगवान इन्द्र को अपनी पहचान देने के बाद, माल्यवान ने बताया कि यह जया एकादाशी को शीघ्र देखने के गुणों के साथ-साथ भगवान श्रीकृष्ण के लाभ भी हैं। अनजाने में इसका परिणाम उनके लिए आश्चर्यजनक परिणाम निकला। भगवान इन्द्र ने उन्हें निर्देश दिया कि जो कोई भी भगवान श्रीहरि या भगवान श्रीहरि के वाहक के रूप में रहा है, वह उनके सहित सभी की पूजा के योग्य बन जाता है। तो, दूसरी बार भगवान इन्द्र ने मनमोह जोडे, माल्यवान और पुष्पदंत का स्वागत किया और उन्हें भगवान इन्द्र के राज्य में आनंद लेने दिया।

जया एकादशी व्रत पूजा विधि

इस व्रत की पूजा विधि इस प्रकार है -

1) जया एकादशी व्रत के लिए उपासक को व्रत से पूर्व दशमी के दिन एक ही सात्विक भोजन ग्रहण करना चाहिए। व्रती को संयमित और ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए।

2) प्रातःकाल स्नान के बाद व्रत का संकल्प लेकर धूप, दीप, फल और पंचामृत आदि अर्पित करके भगवान विष्णु के श्रीकृष्ण अवतार की पूजा करनी चाहिए।

3) रात्रि में जागरण कर श्रीहरि के नाम के भजन करना चाहिए।

4) द्वादशी के दिन जरूरतमंद व्यक्ति या ब्राह्मण को भोजन कराकर, दान-दक्षिणा देकर व्रत का पारण करना चाहिए।

व्रताचरण से फायदे

1) एकादशी व्रत करने से मनुष्य को सभी तरह के पापों से मुक्ति मिलती है।

2) एकादशी व्रत करनेवाला व्यक्ति मृत्यु के पश्चात मोक्ष को प्राप्त करता है।

3) एकादशी व्रत करनेवाला व्यक्ति प्रेत आदि योनियों को प्राप्त नहीं होता है।

4) इस व्रत को नियम पूर्वक करने से व्यक्ति के जीवन की सभी परेशानिया फल भर में समाप्त हो जाती है।

5) इस व्रत का आचरण करने से मनुष्य का जीवन खुशहाल बनता है और साथ ही उसे जीवन पर्यंत धन और समृद्ध की प्राप्ति होती है।

6) इस व्रत का आचरण करने वाले व्यक्ति को लक्ष्मी पति भगवान विष्णु की कृपा होती है और माँ लक्ष्मी जी का आशीर्वाद मिलता है।

श्री प्रपन्नामृतम्

(46वाँ अध्याय)

मूल लेखक - श्री स्वामी रामनारायणाचार्यजी

प्रेषक - श्री रघुनाथदास रान्दड

(गतांक से)

पिशाच-बाधा से राजकन्या की मुक्ति

कुछ दिन रंगदास दम्पति के गृह पर सुखपूर्वक निवास करके उनके द्वारा सत्कृत होकर यतिराज ने पश्चिम दिशा के लिये प्रस्थान किया और वहाँ से कुछ ही दूरी पर वहीं पुष्करिणी नामक एक तालाब था। उसके तट पर तीन दिनों तक शिष्य समुदाय के साथ निवास किया। तदनन्तर वहाँ से दक्षिण प्रदेश की मिथिलापुरी में पहुँचे और वहाँ से फिर मैसूर राज्य के शालग्राम नामक ग्राम में आ गये। इस ग्राम में द्विजाति तो बहुत निवास करते थे, किन्तु वे प्रायः सभी कुछ शून्य अर्थात् मिथ्या मानते थे। इस कारण यहाँ पर यतिराज का किसी ने भी स्वागत सत्कार नहीं किया। मायावाद में आकण्ठ डूबे हुये इन द्विजातियों के उद्धार के लिये यतिराज ने अपने प्रमुख शिष्य श्री दाशरथि को आदेश दिया कि तुम इस ग्राम के मुख्य तालाब (जहाँ का जल सभी ग्रामवासी ग्रहण करते हैं।) पर जाकर उसमें अपने पाँव डुबाकर रखो अर्थात् उस तालाब में अपने पाद-प्रक्षालन करके आओ। गुरुभक्त पर बुद्धिमान आचार्य दाशरथि ने इस आज्ञा का पालन करते हुये उस तालाब पर जाकर उसमें अपने चरण डुबो दिये। जिसके फलस्वरूप-परम श्रीवैष्णव के चरणोदक का पान करने से उस ग्राम में निवास करने वाले सभी जन अहंकार दोष से सर्वथा मुक्त हो गये।

अहंकार ममकार आदि दोषों से मुक्त होकर सभी ग्रामवासी आवाल-वृद्ध-वनितादि यतिराज का शिष्यत्व ग्रहण करके उनके चरणाश्रित बन गये और यतिराज श्री रामानुजाचार्य ने इन सभी को अपनाकर इन पर कृपा करते हुये इनके नित्य दर्शनों के लिये यहाँ अपने चरण-चिह्न स्थापित पर लोगों को आचार्यचरणों का महत्व समझाया। और फिर यहाँ के सभी श्रीवैष्णवों और भक्त आन्ध्रपूर्ण के साथ आपने श्री नृसिंह क्षेत्र में जाकर वहाँ के अधिष्ठान भगवान श्री नृसिंह का दर्शन किया। फिर यहाँ से आप भक्तपूर्ण ग्राम में आये। यहाँ के लोग आपका आगमन सुनकर बड़े प्रसन्न हुये, और फिर बड़े ही समारोह के साथ आपका स्वागत-सत्कार, पाद-पूजन आदि हुआ और फिर कुछ समय यहाँ निवास कर भक्तसमुदाय को आनन्दित किया।

उस समय में यहाँ के राजा की कन्या को ब्रह्मराक्षस ने ग्रस्त कर लिया था। राजा ने अनेकों उपाय किये, बहुत से तन्त्र-मन्त्र जानने वाले लोगों को भी बुलवाया, लेकिन कुछ उपयोग नहीं हुआ। अत्यन्त दुखित राजा ने अपनी कन्या को ब्रह्मराक्षस से छुटकारा करवाने के लिये बहुत उपाय किये, लेकिन वे सभी निष्फल हो गये। ब्रह्मराक्षस के द्वारा ग्रसित राजकन्या रोती, चिल्लाती और नग्न होकर इधर-उधर बड़ी तेजी से दौड़ती थी।

जिसको देखकर वह राजा बड़ा दुःखी और उदास रहने लग गया, और रानी भी राजा के समान ही दुखित होकर दिन-रात आँसू बहाती रहती थी। इस प्रकार से राजा और रानी को अत्यन्त दुखित देखकर उस ग्राम में निवास करने वाले विद्वत् श्रेष्ठभक्त पूर्णाचार्य जो उंछवृत्ति से जीवन निर्वाह किया करते थे - उन्होंने एक दिन रानी और राजा से कहा कि- ''मेरे गुरुदेव यतिराज श्री रामानुजाचार्य को यदि यह राजकन्या दिखलाई जाय तो वे योगिराज निश्चय ही इस दुःख को मिटा देंगे। अर्थात् ब्रह्मराक्षस उनको देखते ही भाग जायेगा।'' ऐसा कहकर उन्होंने यतिराज के द्वारा विद्याध्ययन काल में किये गये ब्रह्मराक्षस-मोचनकार्य की कथा सुनाई। यह सुनकर रानी ने राजा से निवेदन किया और राजा ने इन बातों को सुनकर कहा कि- ''यदि मेरी पुत्री को यतिराज श्री रामानुजाचार्य पिशाच बाधा से छुड़ा देंगे तो मैं उनके चरणों का आश्रय ग्रहण कर लूँगा, इसमें कोई संदेह नहीं।''

उपरोक्त राजा और रानी का वार्तालाप महात्मा भक्त पूर्णाचार्य स्वामी ने आकर यतिराज श्री रामानुजाचार्य को सुनाया। तदनन्तर रानी ने राजा से कहा कि आप यतिराज श्री रामानुजाचार्य को क्यों नहीं बुला लेते? यदि आप उनकी शरण में चले जायेंगे तो निश्चय ही आपका कल्याण है। इस प्रकार रानी के द्वारा प्रेरणा प्राप्त कर राजा ने यतिराज श्री रामानुजाचार्य के पास जाकर हाथ जोड़कर प्रार्थना की कि- महाराज! आप हमारे घर पर पधारकर हमें कृतार्थ कीजिये। यतिराज ने राजभवन में जाने की स्वीकृति दे दी। यह सुनते ही वह राजा अत्यन्त आनन्दित हुआ और आपके आगमन के समय राजकीय बहुमान, हाथी, घोड़े, सैनिक, रथ, ध्वजा, पताका, विविध वाद्यों के साथ आपका राजोपचारिक स्वागत सम्मान करके आपको नगर में प्रविष्ट कराया और फिर राजमहल में उच्च स्वर्ण सिंहासन पर विराजमान करके भक्तिपूर्वक सपरिवार आपका पूजन कर, चरणोदक अपनी कन्या को पिलाया और यतिराज के शिष्यों ने उसी चरणोदक से राजा, रानी, राजकन्या एवं समस्त राजमहल का प्रोक्षण किया जिसके प्रभाव से वह राजकन्या जिस प्रकार पहले रोहिणी नामक तारिका दुष्टग्रह से मुक्त हुई थी, वैसे ही ब्रह्मराक्षस से मुक्त होकर सुन्दर वस्त्राभूषणों से अलंकृत होकर यतिराज के सामने आई। राजकन्या को स्वाभाविक प्रसन्न अवस्था में देखकर महाराज को अत्यन्त हर्ष हुआ और राजकन्या को यतिराज के चरणों में साष्टांग कराकर स्वयं भी रानी सहित यतिराज को साष्टांग प्रणाम और प्रार्थना की। तदनन्तर राजा ने अपने परिवार और समस्त नगरवासियों के साथ यतिराज का शिष्यत्व स्वीकार किया। इस अवसर पर यतिराज श्री रामानुजाचार्य ने राज्य, परिवार एवं समस्त नागरिकों को पंचसंस्कार में दीक्षित करके राजा का विष्णुवर्द्धनदास - यह सेवा वाचक नाम रख दिया। इस घटना को सुनकर राजा के पूर्वाचार्य कई विद्वान् बड़े क्रुद्ध हुये और वे लोग दस हजार की विशाल संख्या में एक साथ ही एकत्रित होकर आये एवं उग्र वचनों में यतिराज से कहा- ''इस प्रकार से हमारे शिष्य को श्रीवैष्णव बनाकर एवं उसका नया नाम रखकर कहाँ जाओगे? तुम्हें हमारे साथ में शास्त्रार्थ करना पड़ेगा, और इसमें विजयी होकर ही यहाँ से जा सकते हो, अन्यथा नहीं। यदि आप विद्वान हैं तो हमारे समक्ष तर्क उपस्थित कीजिये और अपनी संप्रदाय की प्रामाणिकता युक्तिपूर्वक हम लोगों को बताइये। हम ऐसे ही आपको यहाँ से नहीं जाने देंगे।''

दस हजार विद्वानों की बात को स्वीकार कर हृदय में धैर्य रखते हुये किन्तु दर्शकों के समक्ष कुछ डरे हुये के समान जैसे सर्प के द्वारा ग्रसित छोटी चिड़िया चीत्कार करती है, वैसे ही यतिराज के मुख से भी यह निकल पड़ा कि- ''हे रंगनाथ! अब मैं क्या करूँ?'' इस प्रकार कातर वचन बोलकर उन लोगों को मोहित करते हुये यतिराज श्री रामानुजाचार्य चारों तरफ से आवृत्त उस विशाल मण्डप में एक हजार फणों से विभूषित फणीन्द्र के रूप में एक विद्वान् की युक्ति का दस हजार वचनों के द्वारा स्पष्टीकरण करने लगे। इस विलक्षण शक्ति के द्वारा वे सब लोग पराजित हो गये और फिर अधिकांश संतुष्ट होकर आपके चरणाश्रित हो गये।

।।श्री प्रपन्नामृत का 46वाँ अध्याय पूर्ण हुआ।।

क्रमशः

(युवा)

गीतामृत

- श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण

अवतारिका

हमारा यह जीवन कष्ट-निष्ठुरों से भरा हुआ होता है। इस भूमंडल पर हर प्राणी को अनंत संघर्ष का सामना करना पड़ता है। अनंत संघर्ष के पश्चात् ही आदमी को विजय प्राप्त होती है। ऐसे ही और भी, जनन और जरा-मरण का भी मनुष्य को सामना करना पड़ता है। मनुष्य को अपने-अपने कर्म के अनुसार पुनः-पुनः जन्म ले कर, नाना प्रकार की योनियों में उद्भवित होना पड़ता है।

इन जरा, मरण प्रवाह से पार होने के वास्ते मानवों के लिए तीन साधन बताये गये हैं, जिनमें – (1) पहला तत्व है ''भक्ति।'' अहंकार को त्याग कर, इस सरासर जगत का संचालन करने वाली महाशक्ति पर विश्वास रखकर, विनम्र बन कर - उसी सर्व व्यापक शक्ति में बिलगना अथवा उस सर्वमान्य शक्ति के प्रति ''शरणागति'' प्रदर्शित करना। (2) दूसरा तत्व है - ''ज्ञान।'' जो आदमी ज्ञान-प्राप्त करता है, वह यह भलीभाँति जान सकता है कि सत्य और शाश्वत तत्व क्या है। ज्ञानी पुरुष इसकी जानकारी रखता है कि इस धरातल पर असत्य या सत्यवान् तत्व क्या है? सत्यासत्य के इस विवेचन से मनुष्य परिपूर्ण बन जाता है। (3) जरा-मरण पर विजय प्राप्त करने में मनुष्य के लिए आवश्यक तीसरा तत्व है - ''वैराग्य।'' विरागी मानव इस भूमंडल पर जो असत्य व अशाश्वत वस्तु, कर्म, विषय है, उसे त्याग कर सत्य और शाश्वत तत्व के चिंतन में लगा रहता है। शाश्वत तत्व का आश्रय लेना ही ''वैराग्य'' है। ये भक्ति-ज्ञान-वैराग्य तत्व महात्मा ''प्रह्लाद'' की तरह कुछ लोगों में जनम से ही प्रतिपादित हुए होते हैं। यह है - पुराजन्म सुकृत। और कुछ लोगों में - जीव, संभार, संताप के अनुभव से होता है। फिर कुछ लोगों में - बड़े लोगों के उपदेश से, गुरुओं के कहने से और ग्रन्थ आदियों से संपन्न होगा। इस प्रकार-भक्ति, ज्ञान, वैराग्य का प्रबोध कर-मनुष्य को परमपद - सोपानों पर चढ़ा कर, अत्युत्तम जीवन-ज्ञान प्रदान करने वाले अत्युत्तम साधनों में भगवद्गीता अव्वल दर्जे की है। पांडवों ने महाभारत में अत्यंत संघर्षणामय जीवन व्यतीत किया था। अंत में उन्हें 18 दिनों के ''कुरुक्षेत्र'' युद्ध में जुझना पड़ा था। उस संकुल समर में किंकर्त्तव्यता-विमूढ़ बन कर सेना-मध्य खड़े हुए अपने सखा-बन्धु ''अर्जुन'' को महत्तर जीवन-ज्ञान का उपदेश कर शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है महात्मा श्रीकृष्ण।

भगवद्गीता - उन भक्ति, ज्ञान, वैराग्य तत्वों का महाकुंड है, जिसमें जीवन के परम उद्देश्यों का सक्रिय व्याख्यान कर दिया गया है। जन-समूह में ''युवा-पीढ़ी'' जीवन की स्थिरता के लिए आजकल या हर हमेशा संघर्ष करती हुई दिखाई देती है। युवाओं के लिए भगवद्गीता में अत्युत्तम मार्ग-दर्शन गीताशास्त्र में हुआ है।

इस दिशा में यहाँ प्रयत्न किया जा रहा है -

अवजानन्ति मां मूढा मानुषी तनुमाश्रितम्।
परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम्।।(गीता 9-11)

भगवान् अर्जुन से कह रहे हैं - ''हे अर्जुन! मेरे परम प्रिय बंधू! जब मैं साकार मनुष्य के रूप में अवतरित हुआ होता हूँ, कुछ लोग मुझे पहचान नहीं

पा रहे हैं, जो मूढ़ हैं। मैं सकल भूतों के लिए महेश्वर हूँ। उनका एक मात्र यजमानी हूँ। ऐसे समस्त प्राणियों के मेरे व्यक्तित्व का दिव्यत्व उन मूढ़ों के लिए अवगत नहीं हो रहा है।''

व्याख्या

पहुँचे हुए अध्यापक एक-एक बार अपने विद्यार्थियों को उनके निर्लक्ष्य अवधाराणों से उन्हें बाहर घसीट कर गंभीर अध्ययन करवाने-हेतु, कठिन शब्दों का प्रयोग कर जाते हैं। यहाँ श्रीकृष्ण परमात्मा ने 'मूढ़' शब्द का प्रयोग कर दिया है। इसका मतलब है, 'अल्पबुद्धवाला।' भगवान ने इस शब्द का प्रयोग अपने समर्थ साकार रूप को तिरस्कृत करने वालों को उद्देशित करते हुए किया है। परंधाम केवल निराकार है, वह सगुण-साकार रूप में कतई न आने वाला कह कर मूढ़ लोग निर्वाचित करते हैं, यह भगवान के सर्वशक्तिमय, सर्वसमर्थ नामक निर्वचन के विरुद्ध विवेचन होता है। भगवान ने ही इस विविध स्वरूपों, आकृतियों तथा रंगों से भरे जगत का सृजन किया है। क्या ऐसा समर्थ शक्तिमान् भगवान अपने लिए ऐसे एक सशक्त अवतार का सृजन नहीं कर पावेगा? अतएव हमें मूढ़ तत्वों में चिंतन में न जाकर, भगवान के सशक्त, समर्थ साकार रूप को अवगत कर उसका संसेवन अथवा पूजन करना चाहिए।

तमस्त्वज्ञानजं विद्धि मोहनं सर्वदेहिनाम्।
प्रमादालस्यनिद्राभिस्तन्निबध्नाति भारत।। (14-8)

भावार्थ

''तमोगुण, जो जीवों के अज्ञान से जनित होता है, उन्हें 'भ्रांति' में डुबो दे रहा है। आलसी गुण, निद्रा, दोष व तृटियों से अज्ञान जीवों को बंधित बना देता है।''

व्याख्या

तमोगुण अंधकारमय होता है। वह अज्ञान का प्रतीक है। और भी, वह सत्त्वगुण का विरोधी है। इस तमोगुण से प्रभावित जन निद्रापरवश हो जाते हैं और आलसी बन कर-मादकता, हिंसा और जुआ के आनंद का मजा लेते रहते हैं। ऐसे मादक-विहारी मनुष्य क्या अच्छा, क्या बुरा का विवेचन खो बैठते हैं। और - अपने स्वार्थ प्रयोजनों के लिए अनैतिक तथा अवैध काम करने पर तुले हो जाते हैं। अतएव, मनुष्यों को सात्त्विक गुणों का अभ्यासन कर स्वच्छ बनना चाहिए।

ऊर्ध्वं गच्छन्ति सत्त्वस्था मध्ये तिष्ठन्ति राजसाः।
जघन्यगुणवृत्तिस्था अधो गच्छन्ति तामसाः।। (14-18)

भावार्थ

''जो मनुष्य सत्वगुण-संपन्न होते है, उनको उत्तम ऊर्ध्व-लोकों की सिद्धि होती है। राजस गुण वालों को मानव-लोक प्राप्त होते हैं। तामसगुण अर्थात्, जो मूढ़ और अज्ञानी होते, उन्हें तो नीच और अधोलोक संप्राप्त हो जाते हैं।''

ववरण

सत्वगुण का मतलब है सही गुण, अर्थत्, मानव-हित गुण। जो मनुष्य मानवोचित गुणों वाला हो तो वह सत्य, असत्य को पहचानता है और उसका स्वेच्छा से अनुकरण कर विशुद्धात्मा मानव बनता है। लोग उसका अनुसरण करते है। सत्वगुण-संपन्न मानव स्वर्ग आदि ऊर्ध्व लोकों को प्राप्त करता है। राजस-गुणी मानव आडंबरपूर्ण और विलासमय जीवन में मोहित रह कर हर हमेशा भोग-लालसता में रमे रहते हैं। ऐसे राजसलोगों का मध्यस्थ लोक-यानी-मानवलोक संप्राप्त हो जाते हैं। अंत कक्षा के लोग हैं तामसी-मनुष्य। 'तमस' शब्द का अर्थ है 'अंधकार।' तामसी-गुणी मानव का मतलब है 'अंधकार' में रहने वाले जीव। तामसी-गुणी मानवोचित गुणों का दर्शन न कर पा सकेंगे। वे अंधा-दुंध-जीवन बिताते हैं। मनमानी करने पर तुले हो जाते हैं। अमानवीय कार्य करते रहते हैं। तामसी-गुणी लोग अधो लोकों की गति पाते हैं। जहाँ उनके अमानवीय आचरण पर उन्हें सताया जाता है, दंडित किये जाते हैं स्वच्छ बनाने का कठिनतम प्रयास किया जाता है।

अंत्योक्ति

भगवद्गीता एक महत्तर 'मॉग्नाकार्टा' है, जिसमें कर्त्तव्य-विमूढ़ मानवों को जीवन का पाठ पढ़ा कर उन्हें स्वच्छ बनाने का अत्युत्तम प्रयास किया गया है जिसके अनुसरण से हमें सुकृति प्राप्त होती है।

सूर्याष्टकम्

आदिदेव नमस्तुभ्यं प्रसीद मम भास्कर।
दिवाकर नमस्तुभ्यं प्रभाकर नमोऽस्तु ते।। ।1।

सप्ताश्व रथमारूढं प्रचंडं कश्यपात्मजम्।
श्वेतपद्मधरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।। ।2।

लोहितं रथमारूढं सर्वलोकपितामहम्।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।। ।3।

त्रैगुण्यं च महाशूरं ब्रह्म विष्णु महेश्वरम्।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।। ।4।

बृंहितं तेजसां पुंजंवायुराकाशमेव च।
प्रभुंस्त्वं सर्वलोकानां तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।। ।5।

बन्धूक पुष्प संकाशं हारकुंडलभूषितम्।
एकचक्रधरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।। ।6।

विश्वेश्वं विश्वकर्तारं महातेजः प्रदीपनम्।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।। ।7।

श्रीविष्णुं सूर्यं जगतां नाथं ज्ञानविज्ञानमोक्षदम्।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।। ।8।

सूर्याष्टकं पठेन्नित्यं ग्रहपीडाप्रणाशनम्।
अपुत्रो लभते पुत्रं, दरिद्रो धनवान् भवेत्।। ।9।

अमिषं मधुपानं च यः करोति रवेर्दिने।
सप्तजन्म भवेद्रोगी जन्मजन्म दरिद्रता।। ।10।

स्त्री-तैल-मधु-मांसानि येत्यजन्ति रवेर्दिने।
न व्याधि शोकदारिद्र्यं सूर्यलोकं च गच्छति।। ।11।

भगवान महशिव ने ही यह सूर्याष्टक को बोध किया। यह स्तोत्र से मालूम पढता है की सूर्य ही विश्वकर्ता है। हर दिन प्रातःकाल के समय में सूर्य के सामने खडे होकर इस स्तोत्र का पठन करना है। इस स्तोत्र पठन से ग्रहपीड़ा हटा दिया जाएगा। ऐश्वर्य और संतान की प्राप्ति उपलब्ध होता है। रोग में कमी आएगी। मुख्यतः रविवार के दिन नियमानुसार यह स्तोत्र से सूर्य भगवान का प्रार्थना करे तो समस्त लाभ मिलता है।

आदित्य हृदय स्तोत्र

ध्यानम् : नमस्सवित्रे जगदेकचक्षुषे जगत्प्रसूति-स्थिति-नाश-हेतवे।
त्रयिमयाय त्रिगुणात्मधारिणे विरिंचि-नारायण-शंकरात्मने।।

श्लोक :

ततो युद्धपरिश्रान्तं समरे चिन्तया स्थितम्।
रावणं चाग्रतो दृष्ट्वा युद्धाय सभुपस्थितम्।। 1

दैवतैश्च समागम्य द्रष्टुमभ्यागतो रणम्।
उपागम्याब्रवीद्राममगस्त्यो भगवानृषिः।। 2

राम राम महाबाहो श्रृणु गृह्यं सनातनम्।
येन सर्वानरीन् वत्स समरे विजयिष्यसि।। 3

आदित्यहृदयं पुण्यं सर्वशत्रुविनाशनम्।
जयावहं जपेन्नित्यमक्षय्यं परमं शिवम्।। 4

सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वपापप्रणाशनम्।
चिन्ताशोकप्रशमनमायुर्वर्धनमुत्तमम्।। 5

रश्मिमंतं समुद्यन्तं देवासुरनमस्कृतम्।
पूजयस्व विवस्वन्तं भास्करं भुवनेश्वरम्।। 6

सर्वदेवात्मको ह्येष तेजस्वी रश्मिभावनः।
एष देवासुरगणाँल्लोकान् पाति गभस्तिभिः।। 7

एष ब्रह्मा च विष्णुश्च शिवः स्कन्दः प्रजापतिः।
महेन्द्रो धनदः कालो यमः सोमो ह्यपां पतिः।। 8

पितरो वसवः साध्या ह्यश्विनौ मरुतो मनुः।
वायुर्वह्निः प्रजाप्राण ऋतुकर्ता प्रभाकरः। 9

आदित्यः सविता सूर्यः खगः पूषा गभस्तिमान्।
सुवर्णसदृशो भानुर्हिरण्यरेता दिवाकरः।। 10

हरिदश्वः सहस्रार्चिः सप्तसप्तिर्मरीचिमान्।
तिमिरोन्मथनः शम्भुस्त्वष्टा मार्ताण्ड अंशुमान्।। 11

हिरण्यगर्भः शिशिरस्तपनो भास्करो रविः
अग्निगर्भोऽदितेः पुत्रः शंखः शिशिरनाशनः।। 12

व्योमनाथस्तमोभेदी ऋग्यजुःसामपारगः।
घनवृष्टिरपां मित्रो विंध्यवीथीप्लवंगमः।। 13

आतपी मंडली मृत्युः पिंगलः सर्वतापनः।
कविर्विश्वो महातेजा रक्तः सर्वभवोद्भवः।। 14

नक्षत्रग्रहताराणामधिपो विश्वभावनः।
तेजसामपि तेजस्वी द्वादशात्मन्नमोऽस्तु ते।। 15

नमः पूर्वाय गिरये पश्चिमायाद्रये नमः।
ज्योतिर्गणानां पतये दिनाधिपतये नमः।। 16

जयाय जमभद्राय हर्यश्वाय नमो नमः।
नमो नमः सहस्रांशो आदित्याय नमो नमः।। 17

नम उग्राय वीराय सारंगाय नमो नमः।
नमः पद्मप्रबोधाय मार्तण्डाय नमो नमः।। 18

ब्रह्मेशानाच्युतेशाय सूर्यायादित्यवर्चसे।
भास्वते सर्वभक्षाय रौद्राय वपुषे नमः।। 19

तमोघ्नाय हिमघ्नाय शत्रुघ्नायामितात्मने।
कृतघ्नघ्नाय देवाय ज्योतिषां पतये नमः।। 20

तप्तचामीकराभाय वह्नये विश्वकर्मणे।
नमस्तमोऽभिनिघ्नाय रुचये लोकसाक्षिणे।। 21

नाशयत्येष वै भूतं तदेव सृजति प्रभुः।
पायत्येष तपत्येष वर्षत्येष गभस्थिभिः।। 22

एष सुप्तेषु जागर्ति भूतेषु परिनिष्ठितः।
एष एवाग्निहोत्रं च फलं चैवाग्निहोत्रिणाम्।। 23

वेदाश्च क्रतवश्चैव क्रतूनां फलमेव च।
यानि कृत्यानि लोकेषु सर्व एष रविः प्रभुः।। 24

फलश्रुति :

एनमापत्सु कृच्छ्रेषु कान्तारेषु भयेषु च।
कीर्तयन् पुरुषः कश्चिन्नावसीदति राघव।। 25

पूजयस्वैनमेकाग्रो देवदेवं जगत्पतिम्।
एतत्त्रिगुणितं जप्त्वा युद्धेषु विजयिष्यसि।। 26

अस्मिन् क्षणे महाबाहो रावणं त्वं वधिष्यसि।
एवमुक्त्वा तदाऽगस्त्यो जगाम च यथागतम्।। 27

एतच्छ्रुत्वा महातेजा नष्टशोकोऽभवत्तदा।
धारयामास सुप्रीतो राघवः प्रयतात्मवान्।। 28

आदित्यं प्रेक्ष्य जप्त्वा तु परं हर्षमवाप्तवान्।
त्रिराचम्य शुचिर्भूत्वा धनुरादाय वीर्यवान्।। 29

रावणं प्रेक्ष्य हृष्टात्मा युद्धाय समुपागमत्।
सर्वयत्नेन महता वधे तस्य धृतोऽभवत्।। 30

अथ रविरवदन्निरीक्ष्य रामं। मुदितमनाः परमं प्रहृष्यमाणः।
निशिचरपति-संक्षयं विदित्वा सुरगणमध्यगतो वचस्त्वरेति।। 31

आदित्य हृदय स्तोत्र सर्वशत्रु विनाशक है। अंतर्गत और बहिर्गत शत्रुओं का प्रतिकूलता को दूर करते हैं। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का भी यह स्तोत्र प्रसादित करते है। गायत्री मंत्र स्वरूप ही आदित्य हृदय स्तोत्र। सायंसंध्या समयों में इस स्तोत्र का पठन करे, तो गायत्री मंत्र जप करने का फल को प्राप्त लेते हैं। आदित्य हृदय स्तोत्र को पढने से स्थिर संपत्ति की वृद्धि होती है। जीवन चरमांक दशा में मुक्ति को भी प्राप्त लेते हैं।

श्री देवराजाष्टकम्

श्रीमत्काञ्चीमुनिं वन्दे कमलापतिनन्दनम्।
वरदाङ्घ्रिसदासङ्गरसायनपरायणम्।

देवराजदयापात्रं श्रीकाञ्चीपूर्णमुत्तमम्।
रामानुजमुनेर्मान्यं वन्देऽहं सज्जनाश्रयम्।

नमस्ते हस्तिशैलेश श्रीमन्नम्बुजलोचनः।
शरणं त्वां प्रपन्नोऽस्मि प्रणतार्तिहराच्युत।। ।1।

समस्तप्राणिसन्त्राणप्रवीण करुणोल्बण।
विलसन्तु कटाक्षस्ते मय्यस्मिन् जगताम्पते।। ।2।

निन्दिताचारकरणं निवृत्तं कृत्यकर्मणः।
पापीयांस ममर्यादं पाहि मां वरदप्रभो।। ।3।

संसारमरुकान्तारे दुर्व्याधिव्याघ्रभीषणे।
विषयक्षुद्रगुल्माढ्ये तृषापादपशालिनि।। ।4।

पुत्रदारगृहक्षेत्रमृगतृष्णाम्बुपुष्कले।
कृत्याकृत्यविवेकान्धं परिभ्रान्तमितस्ततः।। ।5।

अजस्रं जाततृष्णार्तमवसन्नाङ्गमक्षमम्।
क्षीणशक्तिबलारोग्यं केवलं क्लेशसम्श्रयम्।। ।6।

सन्तप्तं विविधैर्दुःखैर्दुर्वचै रेवमादिभिः।
देवराज दयासिन्धो देवदेव जगत्पते।। ।7।

त्वदीक्षणसुधासिन्धुवीचिविक्षेपशीकरैः।
कारुण्यमारुतानीतैः शीतलैरभिषिञ्च माम्।। ।8।

यह स्तोत्र को पढें, तो वरदराज स्वामी का अनुग्रह से मानसिक प्रशांत मिलता है। इह-पर लोकों का सुख मिलता है। जीवन चरमांक दशा में परमानंद प्राप्त होता है।

गतांक से

श्री रामानुज नूट्रन्दादि

मूल - श्रीरंगामृत कवि विरचित

प्रेषक - श्री श्रीराम मालपाणी

शीर् कोण्डु पेररम् शेय्दु, नल्वीडु शेरिदु मेन्नुम्
पार् कोण्ड मेन्मैयर् कूट्टनल्लेन्, उन् पदयुगमाम्
एर् कोण्ड वीट्टै येळिदिनिलेय्दुवन् उन्नुडैय
कार् कोण्ड वण्मै, इरामानुज इदु कण्डुकोळ्ळे ॥८३॥

भो भगवन् रामानुज! शमदमादिसद्गुणसंपत्त्या शरणागतियोगनिष्ठया च सुदृढमवधारित मोक्षसाम्राज्यलाभानां महतां गोष्ठीषु नाहमन्वितः भगवत्पादारविन्दयुगलात्मक-विलक्षण मोक्षलाभैकसमुत्सुकोऽहम्, ईदृशो ममाध्यवसायो भवदीयनिरतिशयौदार्यफलभूत एवेत्यवधेयम्।

हे श्री रामानुज स्वामिन्! शमदम इत्यादि आत्मगुणोपेत होकर, शरणागतिरूप श्रेष्ठ धर्म का अनुष्ठान कर, फलतया मोक्षरूप परमपुरुषार्थ पाने के दृढ निश्चयवाले, प्रसिद्ध प्रभाववाले महात्माओं की गोष्ठी में मैं नहीं मिलूंगा; किंतु बडी सरलता से आपके उभयपादारविंदरूप परमविलक्षण मोक्ष पाऊंगा। मेरा यह अध्यवसाय भी आपके सीमातीत औदार्य का फल है; यह तो आप ही स्वयं जानते हैं।

क्रमशः

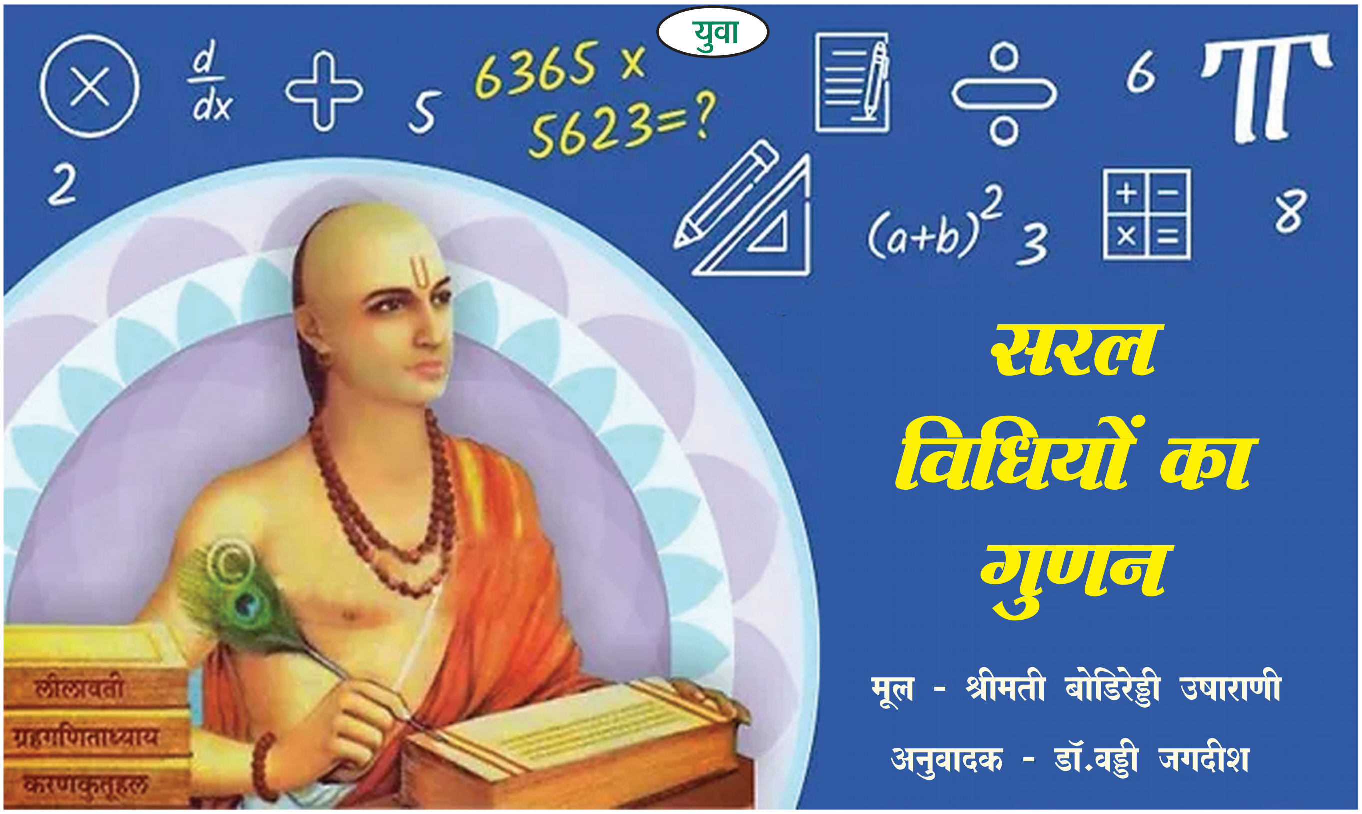

सरल विधियों का गुणन

मूल - श्रीमती बोडिरेड्डी उषाराणी
अनुवादक - डॉ.वड्डी जगदीश

पद्धति : 1

1. दहाई स्थान के अंक समान होने पर संख्याओं का गुणन फल ज्ञात करना :

विधि : प्रथम संख्या को दूसरी संख्याओं की प्रथम संख्या की स्थान को जोड़ने पर प्राप्त संख्या को दहाई स्थान का अंक से गुणा करने के पर प्राप्त हुई संख्या को जोड़ने से लब्ध या फल मिलता है।

उदा (1) : 49 को 42 से गुणा करने के लिए...

49 को 2 मिलाने से 51 होता है। 51 को 4 से गुणा करने पर 204 होता है। इस को दहाई के रूप में लिखने से 2040 बनता है। फिर इसे प्रथम स्थानों का लब्ध 9X2=18 को जोड़ने पर 2058 होता है।

उदा (2) : 58 को 53 से गुणा का फल ज्ञात करने के लिए...

58 को 3 मिलाने से 61 होता है। 61 को 5 से गुणा करने से 305 होता है। फिर इसे दहाई के रूप में लिखने पर 3050 होता है। प्राप्त फल को प्रथम स्थानों की संख्यों का लब्ध 8X3=24 को मिलाने से 3074 होता है।

पद्धति : 2

2. प्रथम स्थान की संख्याएँ बराबर रहने पर लब्धों का ज्ञात करना :

विधि : दहाई स्थानों की अंकों का लब्ध या फल को दशम स्थान में लेना चाहिए। दहाई स्थानों के अंकों का कुल राशि को प्रथम स्थान के अंकों से गुणने पर प्राप्त संख्या को दहाई स्थान में लिखना चाहिए। प्रथम स्थानों के अंकों का फल को प्रथम से लिखना चाहिए।

उदा (1) : 96 को 46 से गुणना करने के लिए...

9X4=36 (सौ) =3600

(9+4)6=78 (दहाई) =780

96X46=3600+780+36

= 4416

उदा (2) : मान लीजिए 62X42...

6X4=24 (शतक)

(6+4)2=20 (दशम)

2X2=4 (प्रथम)

62X42= 2400+200+4

=2604

उदा (3) : मान लीजिए 45X85 का फल चाहिए तो...

4X8= 32 (शतक)

(4+8)X5=60 (दशम)

5X5=25 (प्रथम)

45X85= 3200+600+25

=3825.

पद्धति : 3

3. जब पहले अंक सम हो और एक के स्थान पर अंकों का योग दस होने पर फल को प्राप्त करना :

विधि : किसी एक स्थान के अंकों का लाभ उसके दहाई के स्थान के रूप में लिखा जाना चाहिए। दहाई के स्थान के अंकों को उसके बाद आनेवाले अंकों से गुणा करने के पर प्राप्त अंकों को हजार और सैकडे के स्थान पर लिखना चाहिए।

उदा (1) : 96X94 चाहिए तो...

पहले स्थान के अंक 6, 4 का फल 6X4=24 को दहाई, प्रथम स्थान पर लिखना चाहिए। दहाई स्थान की संख्या 9 है, इसे 10 से गुणना करने पर 90 होता है। इसे हम हजार एवं सैकडे स्थान पर लिखना है...

94X94=9X10	6X4=9024
99X91=9X10	9X1=9009
71X79=7X8	1X9=5009
114X116=11X12	4X6=13224

पद्धति : 4

4. किसी एक संख्या को $7^1/_2$ से गुणना कर लाभ को ज्ञात करना...

विधि : $7^1/_2$ से गुणना करने पर प्राप्त फल को '0' को जुडाने से प्राप्त संख्या से $^1/_4$ भाग को निकालना चाहिए। क्यों कि $7^1/_2$ का अर्थ 10 में $^3/_4$ होता है।

उदा (1) : 44 को $7^1/_2$ से गुणना करना चाहिए तो...

44 को 10 से गुणना करने पर 440 होता है। इसे चौथाई ($^1/_4$) भाग यानि 110 को 440 से निकालना चाहिए। तब फल मिलता है।

$44X7^1/_2$=440-110

=330

उदा (2) : $36X7^1/_2$=360-90

=270.

पद्धति : 5

5. किसी एक संख्या को $12^1/_2$ से गुणना का फल को ज्ञात करना :

विधि (1) : किसी एक संख्या को गुणना करने के लिए उसे '0' से जुडाने पर प्राप्त संख्या में चौथाई भाग को मिलाना चाहिए। क्यों कि वह $2^1/_2$ दस में चौथाई भाग है।

उदा (1) : मान लीजिए 48 की $12^{1}/_{2}$ से गुणना करने पर...

48 को 10 से गुणना करने पर 480 होता है।

480 में चौथाई भाग $(^{1}/_{4})$ 120 होता है।

480, 120 को जुडाने से फल या लाभ 600 होता है।

$48X12^{1}/_{2}$=480+120

=600.

पद्धति : 6

6. किसी एक संख्या को $2^{1}/_{2}$, $3^{1}/_{2}$, $4^{1}/_{2}$, $5^{1}/_{2}$ से गुणना करने पर लाभ को ज्ञात करने पर...

विधि : $2^{1}/_{2}$, $3^{1}/_{2}$, $4^{1}/_{2}$, $5^{1}/_{2}$ से गुणना करने पर....

प्राप्त हुआ फल को आधा करके क्रमशः 5, 7, 9, 11 से गुणना करना...

उदा :

1. $62X2^{1}/_{2}$= 31X5 =155
2. $48X3^{1}/_{2}$= 24X7 =168
3. $36X4^{1}/_{2}$= 18X9 =162
4. $24X5^{1}/_{2}$= 12X11 =132

इस प्रकार विभिन्न पद्धतियों से लाभों का ज्ञात कर सकते हैं।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

श्रीनिवासमंगापुरम्

श्री कल्याण वेंकटेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

2024 फरवरी 29 से मार्च 08 तक

29-02-2024 गुरुवार
दिन - ध्वजारोहण
रात - महाशेषवाहन

01-03-2024 शुक्रवार
दिन - लघुशेषवाहन
रात - हंसवाहन

02-03-2024 शनिवार
दिन - सिंहवाहन
रात - मोतीवितानवाहन

03-03-2024 रविवार
दिन - कल्पवृक्षवाहन
रात - सर्वभूपालवाहन

04-03-2024 सोमवार
दिन - पालकी में मोहिनी अवतारोत्सव
रात - गरुडवाहन

05-03-2024 मंगलवार
दिन - हनुमन्तवाहन
सायं - वसंतोत्सव
रात - गजवाहन

06-03-2024 बुधवार
दिन - सूर्यप्रभावाहन
रात - चंद्रप्रभावाहन

07-03-2024 गुरुवार
दिन - रथ-यात्रा
रात - अश्ववाहन

08-03-2024 शुक्रवार
दिन - पालकी उत्सव, तिरुच्चि उत्सव, अवभृथोत्सव, चक्रस्नान
रात - तिरुच्चि उत्सव, ध्वजावरोहण

(गतांक से)

श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108

- श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया

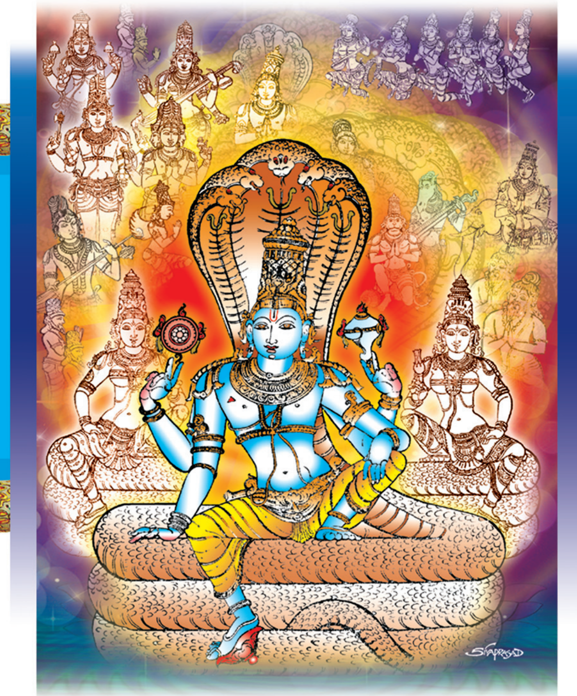

3. तोण्डै नाडु दिव्य क्षेत्र

45) अष्टभुज क्षेत्र (कांचीपुरम)

और तिरुवेहका के पास से कांचीपुरम वरदराज मंदिर से 2 कि.मी. पर है। चिन्न

कांचीपुर में हैं। (हाडसेन पेट तेरडी (जहाँ रथ खडा है) के पास हैं।)

मूलमूर्ति - आदिकेशवपेरुमाल - अष्टभुजपेरुमाल, गजेन्द्र वरदन, विभिन्न आयुधों को धर कर, खडे दर्शन देते हैं।

उत्सवर - चार हाथ - (शंख-चक्र-खड्ग-गदा)।

तायार (माता जी) - पद्मासनी, पुष्पवल्लि।

तीर्थ - गजेन्द्र पुष्करिणी।

विमान - गगनाकृति विमान, चक्राकृति विमान।

प्रत्यक्ष - गजेन्द्र, मूलमूर्ति के - विभिन्न आयुध यह ऐतिह्य है कि यहीं पर गजेन्द्र को भगवान की शरणागति प्राप्त और गजेन्द्र की रक्षा कर मोक्ष प्रदान किया। भूवराह और आंजनेय(हनुमान) सन्निधियाँ है।

मंगलाशासन - 2 आल्वार, 12 दिव्य पद।

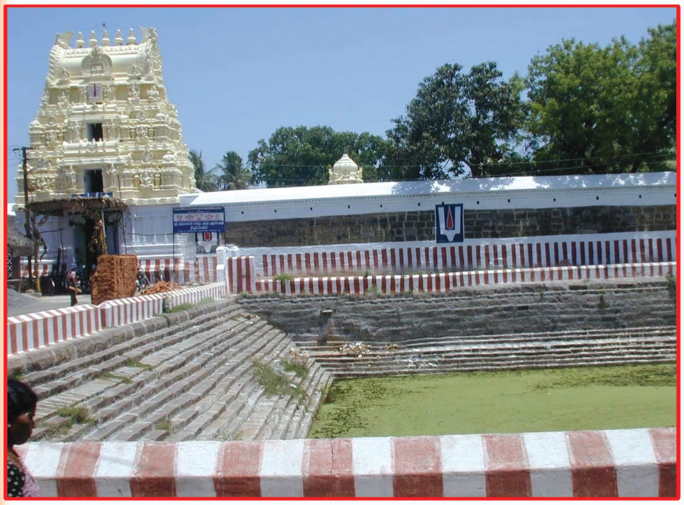

46) (कांचीपुरम - 4) तिरुत्तणका,

(तूप्पुल - कांचीपुरम)

चिन्न कांचीपुर में ही अष्टभुज मंदिर से एक कि.मी. पर है।

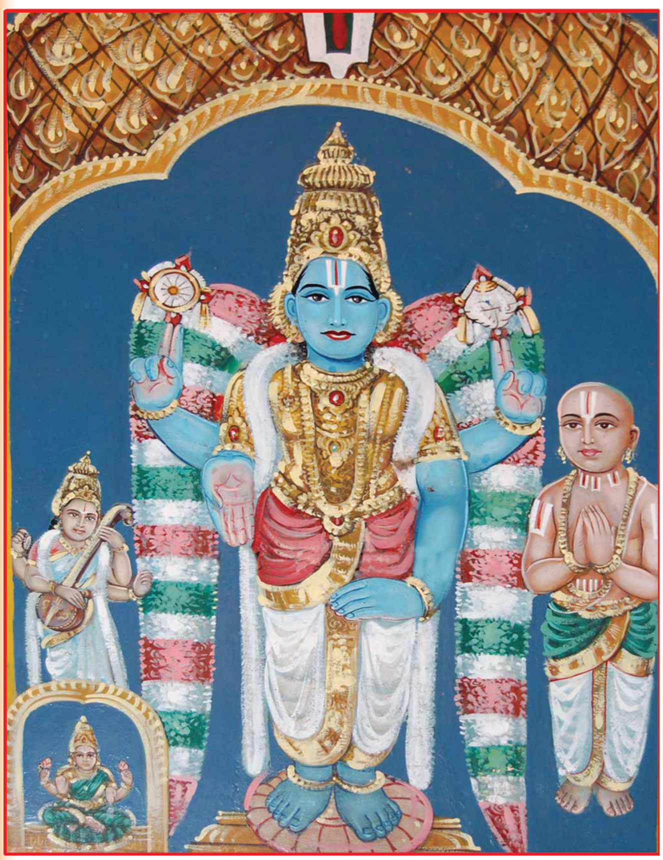

मूलमूर्ति - दीप प्रकाशर (विळक्कोळि पेरुमाल) (तमिल) दिव्य प्रकाशर, शरणागतवत्सलन, हिमोपवनेशन, पश्चिमाभिमुखी खडे दर्शन देते हैं।

उत्सवर - दीप प्रकाशर (विळक्कोळि पेरुमाल) (तमिल) दिव्य प्रकाशर, शरणागतवत्सलन, हिमोपवनेशन, पश्चिमाभिमुखी खडे दर्शन देते हैं।

तायार (माताजी) - मरकतवल्लि।

विमान - श्रीकर विमान।

तीर्थ - सरस्वती तीर्थ।

यह विशिष्टाद्वैत सिद्धान्ताचार्य - श्री स्वामी देशिकन का अवतार स्थल है जहाँ उनकी सन्निधि है ज्ञान मुद्रा में दर्शन देते हैं। देशिकन के पुत्र श्रीनयिना वरदाचार्य ने इस मूर्ति की प्रतिष्ठा की। बगल में उनकी आराधना। भगवान श्री लक्ष्मीहयग्रीव विराजमान है।

स्थल पुराण में बताया जाता है कि ब्रह्मादि देवताओं की रक्षा करने दीपप्रकाश के रूप में आविर्भूत हुए।

मंगलाशासन - 2 आल्वार, 3 दिव्य पद।

47) तिरुवेळुक्कै (कांचीपुरम)

चिन्न कांचीपुरम में ही अष्टभुज मंदिर से एक कि.मी. पर है।

मूलमूर्ति - अलहिय सिंगर, नृसिंह, मुकुन्द नायकन पश्चिमाभिमुखी पद्मासन में विराजमान हैं।

तायार (माताजी) - वेळुक्कै वल्लि, अमृतवल्लि।

तीर्थ - कनक सरस, हेम सरस, प्रह्लाद तीर्थ।

विमान - कनक विमान।

प्रत्यक्ष - भृगु मुनि।

हस्तिगिरि - वरदराज मंदिर में एक गुफा में विराजमान हैं। दूसरा नरसिंह रूप लेकर, असुरों को पश्चिम दिशा में भगाकर वहीं पर योगनृसिंह के रूप में विराजमान है - जिससे असुर वापस न आ पाए। यह कामासिकानृसिंह सन्निधि है। यहाँ कई सन्निधियाँ हैं।

वेळ का अर्थ प्रिय इच्छा है। भगवान यहाँ बडे प्रेम के साथ यहाँ विराजमान है।

मंगलाशासन - 2 आल्वार, कुल 4 दिव्य पद।

क्रमशः

दिसंबर-2023 महीने का क्विज-17 के समाधान

1) हेमांबुजवल्लि तायार - वैकुंठ नायकी,

2) चंद्र विमान, शुद्धसत्व विमान, **3)** तिरुविक्रम भगवान,

4) पेण्णैयारु; कृष्णतीर्थ; चक्रतीर्थ,

5) श्रीकर विमान, **6)** श्रीमहाविष्णु, **7)** श्रीमहाविष्णु,

8) ऋषि विश्वामित्र और देव नर्तकी मेनका,

9) महर्षि भृगु और पुलोमा, **10)** राजा दुष्यंत,

11) प्रभु श्रीराम, **12)** चार वेद,

13) प्रभु श्रीराम, **14)** च्यवन ऋषि, **15)** सीतामैय्या.

दिसंबर-2023 महीने का क्विज-17 के समाधान के विजेता

चि. पियुषा विनिल कोंगारी

चंदा नंबर : IM01061761875288

मिथ की महिला चरित

देवकी

- डॉ.के.एम.भवानी

वसुदेव सुतम देवम् कंस चाणूर मर्धनम।

देवकी परमानंदम्, कृष्णम् वंदे जगद्गुरुम।।

'देवकी' भगवान श्रीकृष्ण की माता है। वह मधुर राज्य के राजा शूरसेन के भाई देवक की पुत्री है। युदुवंश के राजा वसुदेव से देवकी की शादी हो जाती है। जब देवकी और वसुदेव की शादी हो जाती हैं, तब देवकी के ताऊ के पुत्र कंस, जो देवकी को बहुत ही प्यार से देखते है, बहन को ससुराल भेजने के लिए खुद रथ को चलाने लगते हैं। रास्ते में कंस के नाम से पुकारते हुए अशरीरवाणी कहती है कि जिस बहन को खुशी से कंस ससुराल ले जा रहा है, उसीका अष्टम गर्भ से जन्म लेनेवाला पुत्र कंस को मारेगा। तब कंस क्रोध से देवकी को मारने की चेष्टा करता है, तो वसुदेव कंस को शांत कराते हुए कहता है कि देवकी को कुछ हानि नहीं पहुँचाना है। उसके गर्भ से जो भी शिशु पैदा होगा, वह उस शिशु को लाकर कंस को देगा। अबला, नई दुल्हन, उस पर भी बहन को मारना ठीक नहीं है। कंस जैसे वीर मृत्यु भय से नारी को मारना भीरूपन है। इस प्रकार वसुदेव विभिन्न बातों से कंस को समझाने पर वासुदेव की बातों को मानकर और वसुदेव के व्यक्तित्व को जानने के कारण उस पर विश्वास से कंस उस दंपति को कारागार में कैद करके रखता है।

देवकी के गर्भ धारण करने के बाद कंस उस पर और निगरानी बढ़ाता है। देवकी बच्चे को जन्म देते ही वसुदेव अपने दिए हुए वचन के अनुसार उस नवजात शिशु को ले जाकर कंस को देता है। कंस वसुदेव की सत्य निष्ठा से बहुत प्रसन्न होकर कहता है कि देवकी के अष्टम गर्भ के कारण उसे हानि है, तो इस प्रथम संतान को वह मारना नहीं चाहता है। कंस ऐसा वापस भेजने पर भी वसुदेव डरता रहता है कि क्रूर स्वभाव वाला कंस कभी भी, कुछ भी करेगा। कुछ समय के बाद देवर्षि नारद कंस को देखने आकर कहता है कि वसुदेव, देवकी, सारे यादव आदि दैवांश संभूत हैं। कंस दानव अंश है। इसलिए कभी भी उनके कंस को हानि हो सकती है। तब से लेकर कंस देवकी और वसुदेव के प्रथम संतान के साथ-साथ उनके हर नवजात शिशु को मारने लगता है। इस प्रकार छह बार छह शिशु कंस के प्रहार से मारे जाते हैं।

देवकी सातवी बार गर्भ धारण करती है। विष्णु माया उस गर्भ को गोकुल में नंद के पास रहनेवाली रोहिणी, जो वसुदेव की और एक पत्नी है, उसके गर्भ को बदल देती है। फलस्वरूप

रोहिणी को बलराम पैदा होता है। गर्भ के संकर्षण होने से पैदा होने के कारण बलराम 'संकर्षण' भी कहलाया गया है। लोग विष्णुमाया को नहीं समझ पाते हैं और समझते हैं कि देवकी का गर्भ विच्छिन्न हो गया है।

देवकी जब आठवी बार गर्भ धारण करती है, तब भगवान विष्णु को गर्भ में धारण करने के कारण वह माता अपूर्व शोभा से दिखती रहती थी। समय के बीतते-बीतते श्रावण मास के कृष्ण पक्ष में रोहिणी नक्षत्र युक्त अष्टमी तिथि पर आधी रात के समय भगवान विष्णु श्रीकृष्ण के अवतार में पैदा होता है। पैदा होते ही शंख, चक्र, गदा, चतुर्भुज, श्रीवत्सव वक्ष और पीतांबर धारण करके माता-पिता को दर्शन देता है। तब देवकी और वसुदेव उस प्रणाम करके उसकी स्तुति पाठ करते हैं। देवकी अंत में भगवान से इस तरह प्रार्थना करती है-

''हे देव! तेरा इस रूप को बहुत ही जल्दी उपसंहार करो। क्योंकि कंस तुम्हें मेरा पुत्र ही समझेगा। ऐसा समझकर गत छह शिशुओं की तरह तुम्हें भी मानव मात्र समझकर तुम्हें हानि पहुँचाने की कोशिश करेगा।''

तब भगवान विष्णु उन्हें उनके पूर्व जन्म ज्ञान दिलाते हुए कहता है कि - स्वायंभुव मन्वंतर में वसुदेव ''सुतपु'' नामक प्रजापति थे। देवकी पृश्नी नाम से उसकी पत्नी थी। वे दंपति बारह दिव्य साल विष्णु का स्मरण करते तप किए थे। जब भगवान विष्णु उन्हें प्रत्यक्ष हुए, तब वे दोनों मोक्ष माँगने के बजाय भगवान जैसा पुत्र देने का वर माँगते हैं। अपने जैसा कोई नहीं होने के कारण भगवान को खुद तीन बार उनके पुत्र बनकर पृथ्वी पर अवतरित होना पड़ा। पहली बार भगवान विष्णु पृश्नी का पुत्र होने के कारण पृश्नि गर्भ के नाम से पैदा हुए। दूसरी बार जब वे ही दंपति अदिती और कश्यप बने, तब भगवान विष्णु वामन के रूप में उन्हें पुत्र बनकर पैदा हुए। फिर तीसरी बार वे ही दंपति देवकी, वसुदेव बने, तब भगवान विष्णु श्रीकृष्ण के रूप में उनके पुत्र बनकर पैदा हुए। इस प्रकार भगवान तीन बार उन पुण्य दंपतियों के पुत्र बने। तीसरी बार कृष्ण के रूप में पैदा होकर अपना वचन निभाया है इसलिए उन्हें अपना निज रूप दिखाकर पूर्व जन्म ज्ञान भी दिलाया है। भगवान विष्णु सिर्फ इस अवतार में ही खुद को भगवान प्रकट करते हुए जन्म लेते ही माता-पिता को निज रूप में दर्शन करने का भाग्य देकर, उसे वचन देता है कि वे अब कृष्ण को पुत्र भाव से प्यार करते हुए, ब्रह्म भाव से हमेशा स्मरण करते हुए अंत में मोक्ष पाएँगे।

वसुदेव भगवान कृष्ण को उसकी आज्ञानुसार गोकुल में नंद के घर पहुँचाता है और वहाँ यशोदा को लडकी के रूप में पैदा हुई योगमाया को लाकर कंस को देता है। शिशु को मारने के लिए तैयार हुआ कंस को देखकर देवकी दीनता से विनती कहती है कि वह कंस के लिए भानजी है, अशरीर वाणी के

अनुसार हानि तो भानजे से है। पहले छे शिशुओं को ऐसे ही मार डाला है अब कृपा दिखाना है। लेकिन कंस निर्दयता से उस बच्ची को मारने की कोशिश करता है लेकिन वह योगमाया कंस के हाथों से छुटकारा पाकर आकाश में उड़ते हुए कहती है कि कंस को मारनेवाला कृष्ण का जन्म हुआ है। वह गोकुल में है। यह सच बताकर वह गायब हो जाती है। तब देवकी और वसुदेव को जेल में रखने से फायदा नहीं रहने के कारण कंस उन्हें बंधन मुक्त कर देता है। लेकिन दुष्ट का मन स्थिर नहीं रहता है फिर कुछ समय के बाद कंस दुर्जनों की बातों के वश में पड़कर देवकी और वसुदेव को फिर से कारागार में कैद करके रखता है।

बलराम और कृष्ण कंस के आह्वान पर मधुर राज्य में जाते हैं। श्रीकृष्ण कंस का वध करके, नाना-नानी और माता-पिता को कारागार से मुक्ति दिलाता है।

एक दिन माता देवकी कुछ उदासीन रहना देखकर बलराम और श्रीकृष्ण कारण पूछते हैं तो देवकी कहती है कि- रामा! कृष्णा! मुझे मालूम है कि राजा लोग शास्त्रों के उल्लंघन करने के कारण भू भार बढ़ गया है इसलिए उसे कम करने के लिए आप मेरे गर्भ से उत्पन्न हुए हैं। मैं आपके आश्रय में रहना चाहती हूँ।

माता को अपने बच्चों से बहुत प्यार है। कितने बच्चे रहने पर भी वे माता-पिता को ज्यादा महसूस नहीं होते हैं। मुझे आपसे पहले जितने पुत्र पैदा हुए, वे सब कंस के द्वारा मारे गए थे। उनके लिए मेरा मन व्याकुल हो रहा है। मैं कभी भी उन्हें भूल नहीं पाई हूँ। मुझे अपनी जिंदगी में उन्हें एक बार देखने की इच्छा प्रबल होती जा रही है। मुझे मालूम है कि आप अपने गुरु के लिए गुरु दक्षिणा के रूप में उसके मरे हुए पुत्र को लाकर उसे दिया। ऐसे आपको मेरी इच्छा पूरा करना बड़ी बात नहीं है।

''माता की बातों को सुनकर बलराम और कृष्ण उसकी इच्छा पूरा करने के लिए पाताल लोक जाकर बलि चक्रवर्ती के पास रहे देवकी के छे पुत्रों को भूलोक में लाते हैं। उन्हें देखते ही देवकी बहुत प्रसन्न होती है। उसमें माँ की ममता उमड़ पड़ती है और अचानक उसके स्तन से दूध निकलता है तो देवकी उन छः शिशुओं को अपने जांघ पर बिठाकर उसे दूध पिलाती है। तब वे आत्म दर्शन पाकर निज रूप से देवकी और वसुदेव को नमस्कार कर उन्नत लोकों में चले जाते हैं। भगवान की माया को याद करके देवकी चकित हो जाती है।

अर्जुन के द्वारा बलराम और कृष्ण के अवतार की समाप्ति के बारे में जानकर वसुदेव और देवकी पुत्र वियोग से दुःख में डूबकर प्राण छोड़ देते हैं।

देवकी पुत्र :

भगवान विष्णु द्वापर युग में देवकी पुत्र कहलाने में बहुत प्रसन्न होता हुआ होगा। इसीलिए भक्ति साहित्य के कई स्तोत्र या श्लोकों में यह माता-पुत्र का रिश्ता देखने को मिलता है। भीष्म के द्वारा प्रतिपादित श्री विष्णु सहस्रनामों में भी ऐसे कई श्लोक हैं, जो इसे साबित करती है-

छंदोनुस्टुप तथा देवो भगवान देवकी सुतः
देवकी नंदन स्रष्टेति शक्तिः
देवकी नंदन स्रष्टा क्षितीशः पाप नाशनः

एक श्लोक भागवत की शुरुआत भी इस प्रकार है-

आदौ देवकी देवी गर्भ जननम

तीन बार भगवान विष्णु को जन्म देने का सौभाग्य प्राप्त माता देवकी से बढ़कर भाग्यवान नारी सृष्टि में और कोई नहीं है। वह माता सदा धन्य और पूजनीय है।

ऋषि-मुनि

कृपाचार्य

- डॉ.जी सुजाता

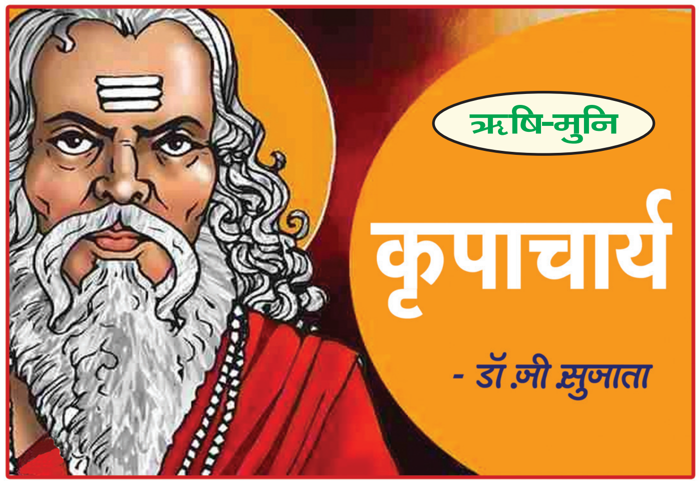

'भागवत' के अनुसार सावर्णि मनु के समय कृपाचार्य की गणना सप्तर्षियों में होती थी।

कृपाचार्य हिन्दू शास्त्रों में वर्णित सात चिरंजीवियों में से एक हैं। जोकि पृथ्वी पर आदिकाल से अंतकाल तक विद्यमान रहेंगे। यह कौरवों और पांडवों के कुलगुरु के रूप में जाने जाते हैं।

कृपाचार्य महाभारत युद्ध में कौरवों की ओर से लड़े। युद्ध के अंत में कौरवों की ओर से बचे तीन लोगों में से एक थे। माना जाता है कि इस युद्ध में वे जिंदा बच गए क्योंकि उन्हें चिरंजीवी रहने का वरदान मिला हुआ था।

जन्म कथा

कृपाचार्य के जन्म के संबंध में पूरा वर्णन महाभारत के आदिपर्व में मिलता है। आदिपर्व के अनुसार, कृपाचार्य, महर्षि गौतम के पुत्र शरद्वान् के पुत्र हैं। शरद्वान् बाणों के साथ ही पैदा हुए थे। इसी वजह से उनकी रुचि जितनी बाणों में थी उतनी किसी भी विद्या में नहीं थी। ऋषि शरद्वान धनुर्विद्या में निपुण थे। तपस्या से उन्होंने सभी अस्त्र शस्त्र प्राप्त कर लिए थे। शरद्वान की गहन तपस्या और अस्त्र शस्त्र का ज्ञान देख देवराज इंद्र भयभीत हो गए और उनकी तपस्या को भंग करने के लिए इंद्र ने जानपदी नामक देवकन्या को स्वर्ग से भेजा। जानपदी शरद्वान के आश्रम पहुँची और उन्हें लुभाने का प्रयास करने लगी। शरद्वान ने संयम से स्वयं पर नियंत्रण होकर लिया परन्तु कुछ समय के लिए उनके मन में विकार का भाव उत्पन्न हो गया। जिसके कारण उनका शुक्रपात हो गया। फिर वह उसी समय अपने धनुष बाण और आश्रम छोड़कर वहाँ से चले गए। शुक्रपात होने पर उनका वीर्य सरकंडों पर गिरा जो भागों में विभाजित हो गया। कुछ समय बाद इन दो भागों से दो संतानों की उत्पत्ति हुई। एक कन्या और एक बालक। माता-पिता दोनों ने नवजात शिशुओं को जंगल में छोड़ दिया, उसी समय संयोग से हस्तिनापुर के राजा शांतनु वहाँ से गुजर रहे थे। तभी उनकी नजर इन बच्चों पर पड़ी और वह उन्हें अपने साथ ले आए। राजा शांतनु ने बालक का नाम कृप और बालिका का नाम कृपी रखा। उनका मानना था कि ये दो बच्चे उन्हें ईश्वर की कृपा से मिले है।

जब ऋषि शरद्वान को यह बात मालूम हुई तो वे राजा शांतनु के पास आए और उन बच्चों के नाम, गोत्र आदि बतलाकर चारों प्रकार के धनुर्वेदों, विविध शास्त्रों और उनके रहस्यों की शिक्षा दी। थोड़े ही दिनों में कृप सभी विषयों में पारंगत हो गए। राजा शांतनु के जाने के बाद भीष्म पितामह ने ही उन्हें अपने कुरु वंश का कुलगुरु बनाया था और कौरवों और पांडवों की शिक्षा के लिए नियुक्त किया गया।

इस प्रकार वे आचार्य बने और कृपाचार्य के नाम से विख्यात हुए। प्रारंभिक शिक्षा समाप्त होने के पश्चात पांडवों और कौरवों को अस्त्रों और शस्त्रों की विशेष शिक्षा देने के लिए द्रोणाचार्य को नियुक्त किया गया। जिनका विवाह कृपाचार्य की बहन कृपी के साथ हुआ।

वे धर्म, निति और शास्त्र के बड़े विद्वान थे। धृतराष्ट्र की सभा में विदुर, भीष्म पितामह और गुरु द्रोणाचार्य के

समान हीं कृपाचार्य भी विशेष स्थान रखते थे। अपनी विद्या और धर्म-नीतियों के आधार पर उन्होंने वर्षों तक कुरु वंश का मार्गदर्शन किया। कौरवों और पांडवों को आरम्भिक शिक्षा कृपाचार्य ने हीं दी थी और बाद में वे गुरु द्रोण के आश्रम में गए।

महाभारत युद्ध

जिस समय युधिष्ठिर युद्ध प्रारंभ होने से पहले अपने गुरुजनों के पास उनसे युद्ध के लिए अनुमति और विजय के लिए आशीर्वाद मांगने गए तो कृपाचार्य के पास भी गए थे। तब इन्होंने कहा था, ''युधिष्ठिर! मैं तुम्हारे कल्याण की सदा कामना करता हूँ। मैं जानता हूँ कि तुम्हारा पक्ष न्याय और धर्म का है।

कौरवों ने अन्याय के पथ का अनुसरण किया है, इसीलिए मैं तुम्हें विजय का आशीर्वाद देता हूँ। यदि मैं कौरवों का दिया हुआ नमक नहीं खाता तो अवश्य तुम्हारे पक्ष में आकर कौरवों के विरुद्ध युद्ध करता, लेकिन अब ऐसा करना धर्म की मर्यादा के प्रतिकूल होगा, इसलिए मैं युद्ध तो दुर्योधन की ओर से ही करूँगा, लेकिन प्रतिदिन प्रातःकाल उठकर ईश्वर से तुम्हारी विजय के लिए प्रार्थना करता रहूँगा।''

महाभारत के युद्ध में कृपाचार्य कौरवों की ओर से सक्रिय थे। कर्ण के वधोपरांत उन्होंने दुर्योधन को बहुत समझाया कि उसे पांडवों से संधि कर लेनी चाहिए; किंतु दुर्योधन ने अपने किये हुए अन्यायों को याद कर कहा कि न पांडव इन बातों को भूल सकते हैं और न उसे क्षमा कर सकते हैं। युद्ध में मार जाने के सिवा अब कोई भी चारा उसके लिए शेष नहीं है। अन्यथा उसकी सद्गति भी असंभव है। तब कृपाचार्य, कृतवर्मा और अश्वत्थामा ने मिलकर पांडवों को युद्ध भूमि में पस्त कर दिया था। युद्ध भूमि पर कृपाचार्य और अर्जुन के मध्य भयंकर युद्ध हुआ था। कृपाचार्य ने अपनी श्रेष्ठ धनुर्विद्या के माध्यम से अर्जुन के हर बाण का करारा जवाब दिया था। लेकिन जब अर्जुन ने कृपाचार्य को शिकस्त देने के लिए गांडीव धनुष को कृपाचार्य के ऊपर चलाया। तब कृपाचार्य अपने स्थान से गिर पड़े।

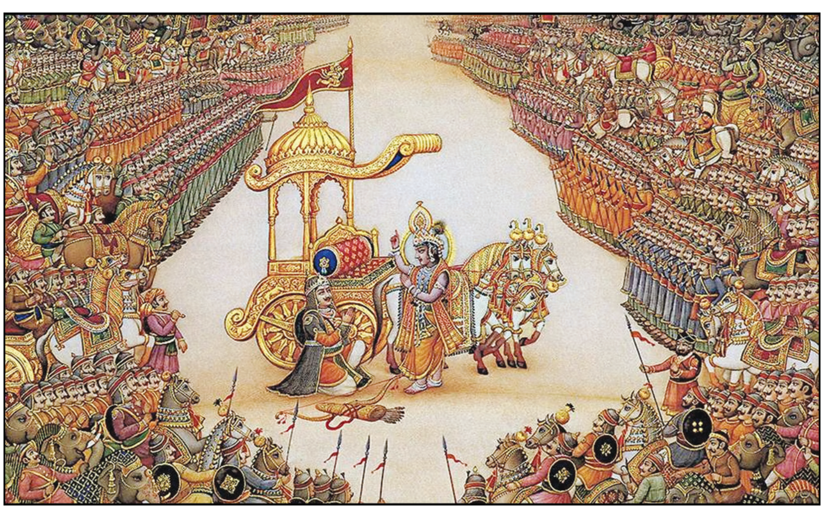

हालांकि उस दौरान अर्जुन ने उन्हें संभलने का मौका दिया। फिर जैसे ही कृपाचार्य ने सफेद चील के पंखों से युक्त बाण को अर्जुन की ओर बढ़ाया कि तभी अर्जुन ने तीखे भल्ल नामक बाण से कृपाचार्य के धनुष के टुकड़े कर दिए। तत्पश्चात् कुंती पुत्र अर्जुन ने कृपाचार्य के कवच को भी अपने प्रहार से भेद डाला। परन्तु उनके शरीर को कोई पीड़ा नहीं पहुँचाई।

पांडवों से बदला

जिस समय दृष्टद्युम्न ने अन्याय से द्रोणाचार्य को मार डाला था तो आचार्य के पुत्र अश्वत्थामा को इस पर बड़ा क्रोध आया और वह पांडव पक्ष से इसका बदला लेने की बात सोचने लगा।

एक दिन उसने यह निश्चय कर लिया जिस प्रकार अन्याय और छल से मेरे पिता को मारा गया है उसी अन्याय और छल से मैं पांडवों की सोती हुई सेना को मार डालूँगा। जब उसने आकर कृपाचार्य को अपना यह विचार बताया तो कृपया चार्य ने उससे कहा- अश्वत्थामा जो सो रहा हो, जिसने शस्त्र उठा कर रख दिया हो, और रथ-घोड़े आदि की सवारी छोड़ दी हो, ऐसे शत्रु का संहार करना उचित नहीं है। इसके बाद कृपाचार्य ने कहा यदि तुम पांडवों से बदला लेना ही चाहते हो तो कल प्रातःकाल मेरे और कृतवर्मा के साथ चलना, हम खुलकर उनसे मुकाबला करेंगे और तुम्हारे पिता की मृत्यु का बदला चुका लेंगे, या तो कल हम शत्रुओं को नष्ट कर देंगे, या स्वयं वीरगति को प्राप्त कर लेंगे।

कृपाचार्य के यह शब्द उनकी न्याय और धर्म के प्रति असीम रुचि को अभिव्यक्त करते हैं। लेकिन इनके चरित्र में वह दृढ़ता नहीं थी जिससे इनका चरित्र आगे के युगों के लिए एक उदात्त रूप का ज्वलंत उदाहरण बनकर खड़ा हो जाता।

इधर तो इन्होंने न्याय और धर्म की इस प्रकार व्याख्या की थी और उधर जब अश्वत्थामा ने छिपकर रात को पाण्डव-सेना का संहार किया तो स्वयं कृपाचार्य ने ही उसमें पूरा-पूरा सहयोग दिया था। नींद से उठकर भागते हुए सौनिकों का इन्होंने और कृतवर्मा ने मिलकर संहार किया था। पाण्डवों के खेमों में इन्होंने आग लगाकर पूरी तरह आततायियों का-सा कार्य किया था।

इस घटना के अलावा वीर बालक अभिमन्यु की अन्यायपूर्ण हत्या के समय ये भी उस घृणित कर्म में सहयोगी थे। उस समय उस निहत्थे बालक को छः महारथी मिलकर मार रहे थे, लेकिन कृपाचार्य की न्याय और धर्म की आवाज जाने कहाँ सो गई थी। इनके चरित्र पर ये ऐसे काले चिह्न हैं, जिनके कारण इनको कभी भी मानव हृदय में वह पवित्र सम्मान नहीं मिल पाएगा, जो अन्य न्यायप्रिय महारथियों को मिलेगा।

महाभारत के समय जब गुरु द्रोण के पुत्र अश्वत्थामा ने पांचाली द्रौपदी के पांचों पुत्रों को सोते समय मार दिया था। उस दौरान कृपाचार्य बाहर पहरा दे रहे थे। तब माता गांधारी ने कृपाचार्य से कहा था कि आप हमारे कुलगुरु है। आपके होते हुए ये पाप कैसे हो गया? अश्वत्थामा ने जो पाप किया है उसमें आप भी भागीदार है। कृपाचार्य को अपनी इस गलती पर बहुत पछतावा हुआ था।

महारभारत के युद्ध में कृपाचार्य और गुरु द्रोणाचार्य कौरवों की तरफ से लड़े थे इस युद्ध में द्रोणाचार्य वीरगति को प्राप्त हुए थे। कौरवों के नष्ट हो जाने पर कृपाचार्य पांडवों के पास आ गए। बाद में कृपाचार्य पांडवों के शासन में धनुर्विद्या की शिक्षा देते रहे। उन्होंने अर्जुन के पोते परीक्षित को धनुर्विद्या सिखाई थी। कहते हैं कि चिरंजीवी का वरदान होने के चलते कृपाचार्य आज भी जीवित हैं।

मकई

- डॉ सुमा जोषि

मकई के दाने की एक किस्म है जो गर्म होने पर फैलता है और फूल जाता है; यही नाम विस्तार द्वारा उत्पादित खाद्य पदार्थों को भी दर्शाते हैं। इसका Latin name है Zea mays everta और इसका Family है poaceae.

खेती और इतिहास

मकई को 9000 साल पहले मैक्सिकों में खेती की जाती थी और आज भी यह दुनिया भर में हर साल पैदा होनेवाली प्रमुख सब्जियों में से एक है। स्नैक के रूप में इसको मेक्सिकों में 3600 ई.पूर्व के पुरातात्विक स्थलों में खोजा गया है और निराधार दावे कहते हैं कि उत्तरी अमेरिका के विकास के दौरान स्क्वैंटो ने स्वयं यूरोपीय निवासियों को पॉपकॉर्न बनाना सिखाया था।

पॉपकॉर्न का इतिहास पूरी तरह से प्रलेखित नहीं है, लेकिन ऐसा लगता है कि इसकी लोकप्रियता संयुक्त राज्य अमेरिका में सबसे पहले ग्रेट लेक्स क्षेत्र में बढ़ी, जहाँ इरोक्वाइस लोग बडी संख्या में बस गए।

वास्तव में ''पॉपकॉर्न'' का उल्लेख करनेवाले पहले विश्वसनीय स्रोत लगभग 1820 के हैं, और 1800 के दशक के मध्य के रिकॉर्ड में पॉपकॉर्न को एक लोकप्रिय पारिवारिक व्यंजन बताया गया है।

1890 के दशक में पॉपकॉर्न की मांग में फिर से बढ़ोतरी हुई, जिसका श्रेय कैण्डी स्टोर के मालिक चार्ल्स क्रेटर्स को जाता है। व्यावसायिक मात्रा में अपने स्टोर पर बिक्री के लिए नट्स को बेहतर ढंग से भूनने के प्रयास में, उन्होंने पहला व्यावसायिक-ग्रेड पॉपकॉर्न पॉपर बनाया, बाद में इसे घोडे और छोटी गाडी शैली की डिजाइन में प्रदर्शित किया। फिर 20वीं सदी की शुरुआत आई, जब सिनेमाघर में पॉपकॉर्न का प्रचलन सामान्य होने लगा।

पॉपकॉर्न की प्रकार

जो चीज पॉपकॉर्न को एक आनंददायक स्नैक बनाती है, वह है इसकी कई प्रकारों में उपलब्धता। पॉपकॉर्न विभिन्न आकार, बनावट और स्वाद में उपलब्ध हैं। इसके ज्ञात प्रकारों में सफेद, मशरूम-शैली, तितली-शैली, भिण्डी आदि शामिल हैं। यह विभिन्न रंगों जैसे, पीला, नीला, बैंगनी या लाल आदि में भी उपलब्ध है। इसके अलावा, यदि कुछ व्यंजनों के साथ मिलाते हैं तो पॉपकॉर्न बॉल्स बना सकते हैं।

पॉपकॉर्न का पोषण मूल्य

पॉपकॉर्न एक सम्पूर्ण अनाज भोजन है और इसमें कई महत्वपूर्ण पोषक तत्व उच्च मात्रा में होते हैं। 100 ग्राम एयर-पॉण्ड पॉपकॉर्न में 387 कैलोरी ऊर्जा, 13 ग्राम प्रोटीन, 78 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 5 ग्राम वसा, 15 ग्राम फाइबर, 7% विटामिन-बी-1 (नियासिन), 12% विटामिन

बी-3 (नियासिन) होता है। 8% विटामिन-बी-6, 18% आयरन, 36% मैग्नीशियम, 36% फॉस्फोरस, 9% पोटैशियम, 21% जिंक, 13% कापर और 56% मैंगनीज होता है।

पॉपकॉर्न के स्वास्थ्य लाभ

पॉपकॉर्न पाचन स्वास्थ्य में सुधार करता है - यह पाचनतन्त्र और पथ के लिए अच्छा है, पॉपकॉर्न में आहार फाइबर की मात्रा अधिक होती है, जो पाचन को नियमित करने में मदद करता है, पूरे दिन पेट भरा हुआ महसूस कराता है, स्वस्थ हृदय के लिए महत्वपूर्ण है, और कोलन कैंसर से बचाने में भी मदद कर सकता है। इसकी उच्च फाइबर सामग्री के कारण, पॉपकॉर्न खाने से स्वस्थ आन्त बैक्टिरिया को बढ़ावा देने में मदद मिल सकती है जो न केवल पाचन के लिए बल्कि स्वस्थ प्रतिरक्षा प्रणाली के लिए भी आवश्यक हैं।

पीला पॉपकॉर्न ल्यूटिन और जैक्सैन्थिन सहित कैरोटिनॉयड एंटी ऑक्सिडेंट से भरपूर होता है, जो न केवल आंखों के स्वास्थ्य की रक्षा करने में मदद करता है, और उम्र से सम्बन्धित धब्बेदार अधःपतन से बचाता है, बल्कि वे सिस्टम-व्यापी सूजन से निपटने के लिए भी काम करते हैं, जो कई पुरानी बीमारियों का कारण बन सकती है।पॉपकॉर्न विटामिन-बी से भरपूर होता है, विटामिन-बी कई प्रणालियों में शारीरिक प्रक्रियाओं को विनिमयित करने के लिए आवश्यक है। इसके दो उदाहरण हैं - ऊर्जा का उत्पादन और विभिन्न पोषक तत्वों का चयापचय।

पॉपकॉर्न में मौजूद विटामिन-बी-3, जिसे नियासिन भी कहा जाता है, प्राकृतिक रूप से अवसाद को कम करने में मदद करने की क्षमता के लिए अध्ययन किया गया है, जिससे पॉपकॉर्न को शाब्दिक अर्थ में ''आरामदायक भोजन'' बना दिया गया है।

पॉपकॉर्न रक्त शर्करा के स्तर को कम करता है, रक्त शर्करा में इन उतार-चढ़ाव को कम करना मधुमेह के रोगियों के लिए एक प्रमुख बोनस है और इसलिए यदि कोई व्यक्ति मधुमेह से पीडित है तो पॉपकॉर्न की हमेशा सिफारिश की जाती है।

इसमें फेरुलिक एसिड होता है, जो सम्भावित रूप से कुछ प्रकार की ट्यूमर कोशिकाओं को मारने से जुडा होता है। इसलिए पॉपकॉर्न कैंसर के इलाज में भी मदद करता है।

ऑर्गेनिक पॉपकॉर्न का एक कटोरा खाना अन्य कम-स्वस्थ स्नैक्स के लिए एक बढ़िया विकल्प प्रदान करता है, और क्योंकि इस में फाइबर की मात्रा अधिक होती है, यह इन स्नैक्स के लिए लालसा को कम कर सकता है। पॉपकॉर्न उम्र बढ़ने के लक्षणों को कम करने में सहायता करता है। यह एक व्यक्ति को बुढ़ापे तक स्वस्थ और खुश महसूस करा सकता है क्योंकि इसमें शक्तिशाली एंटीऑक्सिडेंट होते हैं जो मुक्त कणों (Free radicals) के इन प्रभावों से लडते हैं।

USDA के अनुसार 2.8 gram पॉपकॉर्न में 0.9 mg आयरन होता है। इसलिए अपने आहार में पॉपकॉर्न रखने से शरीर को पर्याप्त आयरन मिलता है और एनीमिया जैसी समस्याओं को दूर रखने में मदद मिलती है। पॉपकॉर्न में फाइबर होते हैं, जो रक्त वाहिकाओं और धमनियों की दिवारों से अतिरिक्त कोलेस्ट्रॉल को खत्म कर सकते हैं, जिससे पॉपकॉर्न शरीर में कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करता है, और इसलिए खतरनाक हृदय संबंधी स्थितियों की सम्भावना कम हो जाती है।

इसमें अधिक फाइबर होने के कारण, कब्ज से राहत दिलाने में मदद करता है। पॉपकॉर्न वजन प्रबन्धन में सहायता करता है। प्रतिदिन मध्यम मात्रा में इसका सेवन पाचन में सुधार लाने में मदद करता है। एयर पॉण्ड पॉपकॉर्न में कम कैलोरी मान के साथ उच्च फाइबर सामग्री होती है। यह भूख को कल करने में भी मदद करता है। पॉपकॉर्न सीधे तौर पर वजन नियन्त्रण में शामिल होते हैं।

मकाई जैसे अनाज कोरोनरी हृदय रोगों के जोखिम कारकों को कम करने में मदद कर सकते हैं। इसमें पॉली

अनसेचुरेटेड तेल होता है, और मक्के में पाया जानेवाला फाइबर शरीर में LDL Cholesterol (bad cholesterol) को कम करने में भी मदद कर सकता है।

पॉपकॉर्न के एंटीआक्सीडेंट्स को पॉलीफेनोल्स कहा जाता है। पॉलीफेनोल्स प्राकृतिक रूप से पाए जानेवाले रसायन हैं, जो पौधों, फलों और सब्जियों से प्राप्त होते हैं। वे त्वचा को किसी भी नुकसान से बचाने के लिए ऑक्सीडेटिव तनाव से लडते हैं।

पॉपकॉर्न के दुष्प्रभाव और एलर्जी

यदि आहार में उचित मात्रा में शामिल किया जाए तो पॉपकॉर्न पूरी तरह से सुरक्षित है। हालाँकि, पॉपकॉर्न कुछ व्याधियों में कुछ एलर्जी प्रतिक्रियाओं को प्रोत्साहित कर सकता है। ये हैं- लोगों को किसी भी एलर्जी के लक्षण जैसे मुंह में सूजन या सांस लेने में कठिनाई होने पर तत्काल देख भाल की आवश्यकता हो सकती है क्योंकि पॉपकॉर्न खाने के तुरन्त बाद ये लक्षण बढ़ सकते हैं।

आन्त्रसूजनवाला रोग (Inflammatory Bowel Disease) वाले लोगों को पॉपकॉर्न नहीं खाना चाहिए क्योंकि इससे लक्षण गम्भीर हो सकते हैं।

पॉपकॉर्न पाचनतन्त्र से सम्बन्धित विकारों को बढ़ा सकता है। इसीलिए ज्यादा ना खाये। यहाँ पर जानकरी मात्र के लिए दिया गया है। संदेह आने पर किसी भी तत् संबंधित वैद्य से संपर्क करें।

''स्वस्थ्य रहें, सुरक्षित रहें।''

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

तिरुपति
श्री कपिलेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

2024 मार्च 01 से 10 तक

01-03-2024 शुक्रवार
दिन - ध्वजारोहण
रात - हंसवाहन

02-03-2024 शनिवार
दिन - सूर्यप्रभावाहन
रात - चंद्रप्रभावाहन

03-03-2024 रविवार
दिन - भूतवाहन
रात - सिंहवाहन

04-03-2024 सोमवार
दिन - मकरवाहन
रात - शेषवाहन

05-03-2024 मंगलवार
दिन - अधिकारनंदिवाहन
रात - तिरुच्चि उत्सव

06-03-2024 बुधवार
दिन - व्याघ्रवाहन
रात - गजवाहन

07-03-2024 गुरुवार
दिन - कल्पवृक्षवाहन
रात - तिरुच्चि उत्सव

08-03-2024 शुक्रवार
दिन - रथ-यात्रा
रात - नंदिवाहन
(महाशिवरात्रि)

09-03-2024 शनिवार
दिन - पुरुषामृगवाहन
रात - (कल्याणोत्सव)
अश्ववाहन

10-03-2024 रविवार
दिन - सूर्यप्रभावाहन में
नटराजस्वामी
त्रिशूलस्नान
रात - ध्वजावरोहण,
रावणासुरवाहन

फरवरी महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र

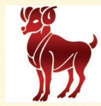

मेष राशि - मास के आरम्भ से ही कार्यक्षेत्र की विघ्न-बाधाओं का शमन, नौकरी व्यवसाय की स्थिति मजबूत होगी। सामाजिक कार्यों में अभिरुचि जिससे कार्य में विकास होंगे। आर्थिक समुन्नति, मान-सम्मान प्रतिष्ठा प्राप्ति, उत्तरार्ध में ग्रहों का परिवर्तन शुभ रहेगा।

वृषभ राशि - स्वास्थ्य सामान्य रहेगा, अपने इष्ट-मित्रों का सहयोग, राजकार्य में प्रगति, आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। कुटुम्बजनों की समस्याओं का समाधान, यत्र तत्र यात्रा से परेशानी जिससे मन खिन्न रहेगा। उद्योग-धन्धे में सफलता, शैक्षणिक प्रगति, प्रतियोगी क्षेत्र में सफलता।

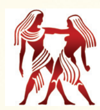

मिथुन राशि - मन उद्वेग पूर्ण-अशान्त, मानसिक कष्ट बना रहेगा। स्वास्थ्य बाधा, अनावश्यक वाद-विवाद-तनाव, अपनों का असहयोग, कुटुम्बिक चिन्ता, अपने वाणी व्यवहार पर नियन्त्रण रखे नहीं तो नौकरी में उच्चाधिकारियों से अनावश्यक कलह। आय स्त्रोतों में व्यवधान उत्पन्न, सामयिक परेशानियों में वृद्धि, दाम्पत्य जीवन सौहार्द्र पूर्ण रहेगा।

कर्कटक राशि - शनि की ढ़ैया के कारण परेशानी होगी उलझनें उत्पन्न होंगे। अपने व्यवहारिक क्रिया कलापों के द्वारा आप अपना उन्नति कर सकते हैं। अनावश्यक लोगों से मतभेद न करे, अपने कार्यो के प्रति श्रद्धा बना कर रखे तो मार्ग अवश्य प्रशस्त होंगे।

सिंह राशि - आपका मनोबल बढेगा, आरोग्य सुख प्राप्त होंगे, शत्रु पक्ष कमजोर, आर्थिक स्थिति संतुलित रहेगा। गृह-भूमि लाभ, कृषि कार्यों में प्रगति, नौकरी में उल्लास, पठन-पाठन में अभिरुचि, उद्योग-धन्धों में सफलता। पारिवारिक सुख, संतान सुख, मान-सम्मान में वृद्धि, आर्थिक लाभ, अपनों का सहयोग, मित्रों का साथ मिलेगा।

कन्या राशि - अव्यवस्थित दिनचर्या, वायुविकार, कार्य क्षेत्र में असफलता, गृहस्थ जीवन सौहार्द्र पूर्ण, मासपर्यन्त धन का आवागमन बना रहेगा। संतान पक्ष की चिन्ता, शैक्षणिक विकास, इष्ट-मित्रों का सहयोग, गृह-भूमि, वाहन लाभ, भवन निर्माण में प्रगति। उद्योग व्यापार में अनेकानेक सफलता। घरेलू उपकरणों में वृद्धि।

तुला राशि - स्वास्थ्य सामान्य रहेगा, कार्य-व्यापार क्षेत्रों में होने वाले विघ्न बाधाओं का निवारण होगा। अपने खर्च को सीमित रखे किसी से लेन देन अधिक न करे सावधानी बर्ते। पारिवारिक सुख शान्ति हेतु सार्थक प्रयास करे, रोजी रोजगार में अनुकूलता, छात्रों को पठन-पाठन में रुचि। उत्तरार्ध में समस्याओं का समाधान होगा।

वृश्चिक राशि - प्रभाव-प्रताप की वृद्धि, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, आर्थिक समुन्नति, राजकीय सहयोग, भ्रातृ सुख, रचनात्मक कार्यों में रुचि बढ़ेगी जिससे सफलता मिलेगी। नौकरी क्षेत्रों में प्रगती, प्रेम संबंधों में प्रगाढ़ता, विद्या-बुद्धि का विकास, व्यापार क्षेत्रों में प्रगति। वाहन लाभ, सामाजिक-धार्मिक कार्यों में रुचि।

धनुष राशि - स्वास्थ्य उत्तम बना रहेगा, अपने चातुर्य, बुद्धि और परिश्रम-प्रयास के द्वारा कार्यसिद्धि। मन प्रसन्न रहेगा, अपनों का पूर्ण सहयोग, मित्र एवं सहयोगियों के साथ अनुकूलता। नौकरी व्यवसाय में प्रगति एवं अनेकानेक लाभ के अवसर प्राप्त होंगे।

मकर राशि - अपने मन को संतुलित रखे क्योंकि उग्र-क्रूर कर्मो में रुचि बढ़ेगी, निरर्थक वाद-विवाद से बचे वरना अपयश भोगना पढ़ सकता है। आर्थिक संतुलन, सामाजिक-धार्मिक कार्यों के प्रति रुचि, प्रतियोगी क्षेत्रों में सफलता, अपने कुटुंबिक सुख, रोजी-रोजगार क्षेत्रों में लाभ।

कुंभ राशि - स्वास्थ्य और आर्थिक पक्ष कमजोर रहेगा। अपने दिनचर्या को बना कर रखे, संयमित व्यवहार, यत्र तत्र यात्रा न करे कष्टप्रद होगा। उद्योग-व्यापार में अनुकूलता, छात्रों के लिए सामान्य समय रहेगा। सुन्दरकाण्ड का पाठ एवं हनुमानजी का आराधना करने से कष्ट एवं उलझनों से निवारण मिल सकता है।

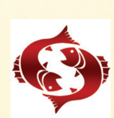

मीन राशि - यह माह आपके लिए उत्तम सिद्ध होगा। आर्थिक स्थिति मजबूत, सामयिक प्रयासों में सफलता, दैनन्दिन जीवन की नियमितता, नौकरी में उल्लास, रचनात्मक कार्यों में रुचि एवं प्रगति। उद्योग-व्यापार में लाभ, यत्र तत्र भ्रमण करने का अवसर मिलेगा।

नीतिकथा

सात दिन बचे हैं!!

- श्री के.रामनाथन

संत केशवदास भगवान विष्णु के महान भक्त थे। एक बार वे एक गाँव में पहुँचे। वह गाँव अत्यंत सुंदर था और वह गंगा नदी के किनारे स्थित था। नदी के किनारे विष्णु भगवान का एक छोटा मंदिर भी था। संत केशवदास ने उस मंदिर में थोडे काल तक ठहरने का निश्चय किया। वे रोज गंगा नदी में स्नान करते थे, तब भगवान का नाम जोर से कहते हुए स्नान करते थे। उसके बाद मंदिर में आकर भगवान की उपासना करते थे। एक बार एक दुष्ट ने संत को तंग करना चाहा। उस दिन जब संत जी नदी में नहाने गये तब वह किनारे पर उनको आने की इंतजार में बैठा था। जब संत स्नान करके लौटे तो तब वह उन पर थूककर अपमान करने लगा।

संत बडे शांत से फिर नदी में स्नान करके लौटे थे, वह दुष्ट उसी कार्य को फिर किया था। लेकिन संत को उस दुष्ट के प्रति गुस्सा नहीं आयी। वे फिर स्नान करके लौटे तो वह दुष्ट भी उसी कार्य को फिर किया। अब भी संत शांत थे। यह देखकर दुष्ट को उनके व्यवहार पर बडा आश्चर्य हुआ। उसने संत के चरणों में गिरकर नमस्कार किया और अपने कार्य के लिए क्षमा माँगी। तब उसने संत से पूछा, ''स्वामीजी मैंने अपने बूरे कार्य से आपको कई बार अपमान किया, पर आप मुझपर क्रोधित नहीं हो उठे। आपके ऐसे महत्वपूर्ण गुण से मैं एकदम चकित हूँ। आप मुझे जरा बताइये कि इतने अपमान को सहने की शक्ति आपको कैसे प्राप्त हुई?''

यह सुनकर संत ने कहा, ''वत्स मैं तुम पर क्यों गुस्सा करूँ? क्योंकि तुम्हारे वास्ते ही मुझे इस पावन नदी गंगा में अनेक बार स्नान करने का और मुझे पवित्र बना लेने का भाग्य मिला। इतना कहकर उन्होंने उस दुष्ट को गौर से देखा फिर कहा जरा तुम अपनी हथेली दिखाओ। संत के कहे अनुसार दुष्ट ने अपने हथेली दिखाई। संत ने उसमें अंकित रेखाओं को गौर से देखा फिर कहा, वत्स तुम्हारी आयु में अब सिर्फ सात दिन ही बचे हैं और सात दिनों के बाद तुम मर जाओगे।''

यह सुनकर दुष्ट के मन में अब अपने जीवन के बारे में डर पैदा हो गया। वह जानता था कि महान संत भविष्य को बताने में बडे समर्थ हैं। इसलिए उसको संत की बात पर

बडा विश्वास था। इसलिए वह उनसे बिदा लेकर तुरंत अपने यहाँ आकर पत्नी और बच्चों से सारी बातें बतायी। उसने सोच लिया कि अब दुःख करने से कोई फायदा नहीं। इसलिए वह उन सात दिनों के अंदर जो जो काम करना है उन सब को करने में लग गया।

ठीक सात दिनों के बाद संत केशवदास उसके यहाँ आये। उस आदमी ने उनका उचित आदर सत्कार किया। उसने संत से कहा, "संत महराज, मेरा जीवन काल में बचे इन सात दिनों में जो जो काम करना है उन सबको करके अब मृत्यु की इंतजार में शांत बैठा हूँ।" तब संत ने उसे देखकर कहा, "प्रिय वत्स! अब तुम किस मनोदशा में हो उसी दशा में ही मैं सदा रहता हूँ। इसलिए तो तुम्हारे दुष्ट व्यवहार पर मुझे गुस्सा नहीं आयी। क्योंकि जब चाहो मृत्यु आ सकती है यह सोचकर सदा हम उत्तम कार्य अपने जीवन में करते रहेंगे तो भलाई हो होगी। ऐसे मनोभाव से हम अपने मन में बडी शांति का अनुभव भी करते हैं। एक दूसरे की निंदा या स्तुति करना छोडकर सब की भलाई सोचते हैं। इस सत्य को बताने पर तुम समझ नहीं पाओगे बल्कि अनुभव करने पर ही समझ पाओगे। यह सोचकर ही मैंने तुमसे कहा कि तुम्हारे जीवन में सात दिन ही बचे हैं। असल में तुम्हें लम्बी आयु है। इसलिए तुम अपने अनुभव को सदा मन में रखकर निश्चिंत अपना जीवन बिता सकते हो।" इस प्रकार संत ने उसका आशीर्वाद देकर वहाँ से निकल गये।

हाँ, यह तो सत्य है कि मानव के जीवन में मृत्यु जब चाहों आ सकती है। इसे समझकर हर एक को समाज की भलाई के कार्य में सदा लगे रहना चाहिए। ऐसे व्यवहार से गाँव, देश और सारे संसार में समृद्धि सदा बनी रहेगी।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

लेखक-लेखिकाओं से निवेदन

सप्तगिरि पत्रिका में प्रकाशन के लिए लेख, कविता, रचनाओं को भेजनेवाले कृपया लेखक-लेखिकाओं निम्नलिखित विषयों पर ध्यान दें।

1. लेख, कविता, रचना, अध्यात्म, दैव मंदिर, भक्ति साहित्य विषयों से संबंधित हों।
2. कागज के एक ही ओर लिखना होगा। अक्षरों को स्पष्ट व साफ लिखिए या टैप करके मूलप्रति डाक या ई-मेइल (hindisubeditor@gmail.com) से भेजें।
3. किसी विशिष्ट त्यौहार से संबंधित रचनायें प्रकाशन के लिए ३ महीने के पहले ही हमारे कार्यालय में पहुँचा दें।
4. रचना के साथ लेखक धृवीकरण पत्र भी भेजना जरूरी है। 'यह रचना मौलिक है तथा किसी अन्य पत्रिका में प्रकाशित नहीं है।'
5. रचनाओं को प्रकाशन करने का अंतिम निर्णय प्रधान संपादक का कार्य होगा। इसके बारे में कोई उत्तर प्रत्युत्तर नहीं किया जा सकता है।
6. मुद्रित रचना के लिए परिश्रमिक (Remuneration) भेजा जाता है। इसके लिए लेखक-लेखिकाएँ अपना बैंक पास बुक का प्रथम पृष्ठ जिराक्स (Bank name, Account number, IFSC Code) रचना के साथ संलग्न करके भेजना अनिवार्य है।
7. धारावाहिक लेखों (Serial article) का भी प्रकाशन किया जाता है। अपनी रचनाओं को निम्न पते पर भेज दें। पता-

प्रधान संपादक,
सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे.प्रेस परिसर, के.टी.रोड,
तिरुपति – 517 507. चित्तूर जिला।

चित्रकथा

"अपना" कुछ भी नहीं है

तेलुगु मूल - डॉ.के.रविचंद्रन्
अनुवादक - डॉ.एम.रजनी
चित्रकार - श्री टी.शिवाजी

वैसे तुम्हारी नाक की नथ कहाँ है।
हाँ मेरे वह नथ है।
क्या तुम उसे मुझे एक बार दिखाओगे? भोजन के बाद ही... दिखाओ। कोई जल्दी नहीं है।
हे परमात्मा! पाण्डुरंगा! मुझे क्षमा कीजिए। मेरे पास और कोई विकल्प नहीं बचा। इसलिए मैं यह जहर पी रही हूँ।
जैसे ही सरस्वतीबाई जहर पीने वाली थी। उन्हें उस पात्र में नथ दिखाई पड़ा। वह स्तब्ध रह गयी। वह भगवान की कृपा पर प्रसन्न हुई।
ताला तो जैसे के तैसा ही है पर हीरों का नथ गायब हो गया।
मैं दुकान में जिस नथ को सुरक्षित रखा वह गायब है। वह वृद्ध आकर अपनी चीज पूछने पर मैं क्या जवाब दूँ।
ये लो इसे दे दो।
मैं उस चीज को नहीं लूँगा जो तुम्हारी मैथकेवालों ने तुम्हें दी है।
उस आभूषण को आज एक बूढे ब्राह्मण को दे दिया। आज यह नथ भी उस परमात्मा से ही प्राप्त हुआ।
जो कुछ घटित हुआ था उसने अपने पति से सब कुछ कहा था।
छीः छीः मैं पापी हूँ। आज तक मैं इस भ्रम में था कि सारी धन दौलत मेरी मेहनत के कारण ही प्राप्त हुआ। जो कुछ मुझे मिला है वह सब भगवान की कृपा है। मैं अपनी अज्ञान के कारण समझ नहीं पाया। मैं मनुष्यों की दुःख में भागीदार नहीं बन सका। परमात्मा से दूर रह गया।
2
भगवान की महिमा से शीनप्पा में महान परिवर्तन आया। अपनी सारी संपत्ति को दान देकर, पत्नी के साथ पंडरीपुर पहुँच गये। वे वहाँ भिक्षाटन कर अपनी भूख मिटाते हुए, निरंतर (दिन-रात) भगवान रंगा की सेवा में तल्लीन हो गये।
स्वस्ति

तिरुमल तिरुपति देवस्थान,
तिरुपति।

प्रश्नोत्तरी (क्विज) की नियमावली

1) प्रश्नोत्तरी की प्रतियोगिता केवल 15 वर्षों के अंदर बच्चों के लिए है।
2) भाग लेने वाले बच्चे हिंदु धर्म के होना अनिवार्य है।
3) इस प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले बच्चों के अभिभावक अनिवार्य रूप से ति.ति.दे. के द्वारा प्रकाशित होने वाली 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक मासिक पत्रिका का चंदादार होना आवश्यक है। प्रश्नोत्तरी के जवाबों के साथ अनिवार्य रूप से चंदादार की अपनी चंदा संख्या, नाम, पता, पिन-कोड के साथ फोन नंबर भी स्पष्ट रूप से लिख कर हमारे कार्यालय को भेजना चाहिए।
4) प्रश्नोत्तरी के जवाब, प्रश्नों के नीचे सूचित खाली जगहों पर लिख कर भेजना चाहिए।
5) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र ओरिजनल या जिराक्स प्रति मान्य है।
6) जवाबों में कोई काट-छांट या सुधार नहीं होना चाहिए।
7) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र **इस महीने का 25वाँ तारीख** के अंदर पहुँचाने की अंतिम तिथि है।
8) इस प्रश्नोत्तरी या क्विज में सही जवाब लिखने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को मात्र ही 'लक्कीडिप पद्धति' में चुन कर विजेताओं की घोषणा की जाती है।
9) घोषित विजेताओं के नाम आगामी मास की 'सप्तगिरि' पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं।
10) ति.ति.दे. के प्रधान संपादक कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों के बच्चे इस प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के लिए अयोग्य हैं।
11) प्रश्नोत्तरी से संबंधित कोई भी समाचार फोन से नहीं दिया जाएगा। कृपया फोन से संपर्क न करें। ति.ति.दे. का निर्णय ही अंतिम है।
12) क्विज का समाधान भी इसी पुस्तक में है।

प्रश्नोत्तरी-जवाब कृपया इस पते पर भेजे :-
प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे. प्रेस परिसर, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507, तिरुपति जिला, आंध्र प्रदेश।

बच्चे का नाम..
लिंग/आयु..........., चंदा नंबर.......................
पता..
....
मोबाइल नं..

क्विज-19

1) वकुलमाता का पूर्व अवतार का नाम क्या है?
ज)..
2) श्रीकृष्णदेवराय की रानियों का नाम क्या है?
ज)..
3) देवकी के पुत्र का नाम क्या है?
ज)..
4) कंस का वध किसने किया था?
ज)..
5) श्रीकृष्ण को कारागार में जन्म देनेवालें माता-पिता का नाम क्या है?
ज)..
6) अष्टभुज क्षेत्र (कांचीपुरम) का तीर्थ पुष्करिणी का नाम क्या है?
ज)..
7) तिरुत्तणका, तूप्पुल-कांचीपुरम् क्षेत्र के देवी माँ का नाम क्या है?
ज)..
8) तिरुत्तणका, तूप्पुल-कांचीपुरम् क्षेत्र के विमान गोपुर का नाम क्या है?
ज)..
9) मकई (मक्का) का लाटिन नाम क्या है?
ज)..
10) श्रीनिवासनायक की धर्मपत्नी का नाम क्या है?
ज)..
11) सरस्वतीबाई ने ब्राह्मण को किस चीज का दान किया?
ज)..
12) वसंत पंचमी के दिन किस देवी माँ की आराधना करते हैं?
ज)..
13) माघ सप्तमी उत्सव को क्या कहते हैं?
ज)..
14) एकादशी का उद्भव किस महापुरुष दैवज्ञ से संभव हुई?
ज)..
15) अर्धब्रह्मोत्सव को तिरुमल में किस दिन संपन्न करते है?
ज)..

बिंदी को जोड़िए

रंगों को भरिये क्या!

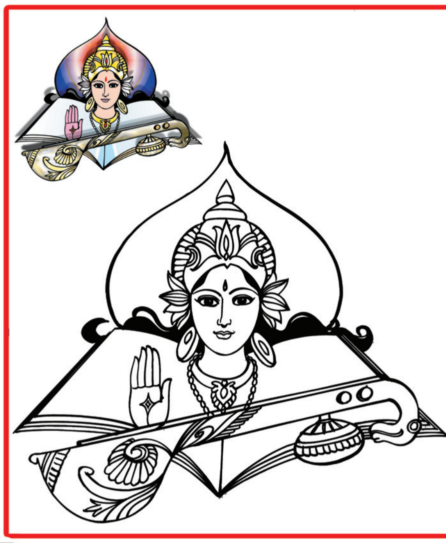

निम्न लिखित को मिलाएँ!

1) पुस्तक — अ) हलवा
2) ऋषि — आ) कमल
3) फल — इ) आश्रम
4) तालाब — ई) पेड़
5) गाजर — उ) कलम

1) उ 2) इ 3) ई 4) आ 5) अ

सूर्य भगवान का स्तोत्र

उदये ब्रह्मरूपश्च
मध्याह्नेतु महेश्वरः।
अस्तकाले स्वयं विष्णुः
त्रिमूर्तिश्च दिवाकरः।।

अच्छी वाणी दो प्रकार की होती है

नकारात्मक वाणी।

सकारात्मक वाणी।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

सप्तगिरि

(आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका)

चंदा भरने का पत्र

1. नाम : ....
(अलग-अलग अक्षरों में स्पष्ट लिखें) ....
....
पिनकोड ....
मोबाइल नं ....

2. वांछित भाषा : ☐ **हिन्दी** ☐ तमिल ☐ कन्नड ☐ तेलुगु ☐ अंग्रेजी ☐ संस्कृत

3. वार्षिक चंदा ☐ रु.240/-; जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) ☐ रु.2,400/-;
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा ☐ रु.1,030/-

4. चंदा का पुनरुद्धरण :
(अ) चंदा की संख्या :
(आ) भाषा :

5. शुल्क का विवरण :
धनादेश (BC's) / मांगड्राफ्ट संख्या (D.D.) /
भारतीय डाकघर (IPO) / ई.एम.ओ. (EMO) / :
दिनांक :

स्थान :
दिनांक : चंदा भरनेवाले का हस्ताक्षर

- वार्षिक चंदा : रु.240/-, जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) : रु.2,400/- 'प्रधान संपादक, ति.ति.दे., तिरुपति' के नाम से मांगड्राफ्ट लेकर निम्न सूचित पते पर भेज सकते हैं।
- नवीन चंदादार या चंदा का पुनरुद्धार करनेवाले इस पत्र के कूपन को काटकर, एक कागज पर चंदादार को अपने पूरे विवरण के साथ सुस्पष्ट लिखकर निम्न पते पर भेजना चाहिए।

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे.प्रेस परिसर, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507. तिरुपति जिला, (आं.प्र)

धोखा मत खाओ!

हमारी दृष्टि में आया है कि कुछ लोग 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका की सदस्यता के लिए यह कह कर राशि वसूल करने में मग्न हैं कि वे श्री बालाजी के दर्शन, प्रसाद आदि की व्यवस्था करेंगे। ऐसे लोगों पर विश्वास न करें। उनसे सावधान रहें।

श्री बालाजी के दर्शन और प्रसाद पाने केलिए 'सप्तगिरि' पत्रिका कार्यालय से कोई संपर्क न करें। क्यों कि उन से पत्रिका कार्यालय का कोई संबंध नहीं है। कृपया चंदादार अपना चंदा नकद को सीधा 'प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, ति.ति.दे., तिरुपति' पता को भेजना पडेगा।

ति.ति.देवस्थान ने सदस्यता राशि लेने के लिए किसी व्यक्ति को नियुक्त नहीं किया। अतिरिक्त राशि का भुगतान न करें। दलालों पर विश्वास मत करों।

STD Code: 0877
दूरभाष :
2264359, 2264543.
संपादक : 2264360

कॉल सेंटर नंबर :
2233333, 2277777.

मंत्र
ॐ नमो वेंकटेशाय

Printed by Sri P. Ramaraju, M.A., and Published by Dr.K. Radha Ramana, M.A., M.Phil., Ph.D., on behalf of Tirumala Tirupati Devasthanams and Printed and Published at Tirumala Tirupati Devasthanams Press, K.T.Road, Tirupati-517 507. Editor : Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D.

दि.19-12-2023 को आं.प्र. राज्य के राज्यपाल माननीय श्री एस.अब्दुल नजीर जी ने तिरुमल, श्री बालाजी का दर्शन किया। इस संदर्भ में स्वामीजी का तीर्थप्रसाद व चित्रपठ को ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष श्री बी.करुणाकर रेड्डी जी से स्वीकारते हुए दृश्य।

दि. 19-12-2023 को तिरुमल, श्री बालाजी के मंदिर में शास्त्रोक्त रूप में 'कोइल आल्वार तिरुमंजन' कार्यक्रम को संपन्न किया। इस कार्यक्रम में ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष और ति.ति.दे. के ई.ओ. ने भाग लिया।

दि. 26-12-2023 को तिरुमल, अन्नमय्या भवन में ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष, ति.ति.दे. के ई.ओ., ति.ति.दे. के जे.ई.ओ.(एच.&ई.) और ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अन्य सदस्यगण ने ति.ति.दे. के द्वारा मुद्रित 'गोविंद कोटी पुस्तकें', 'भगवद्गीता पुस्तकें' और 'स्थानीय मंदिरों का कैलेंडरों' को विमोचन किया।

ति.ति.दे. स्विम्स अस्पताल के आध्वर्य में बालाजी इंस्टिट्यूट ऑफ अंकालजी विभाग के विशेषाधिकारी डॉ.एम.जयचंद्रारेड्डीजी ने दि. 18-12-23 को 'यंग सर्जन ऑफ इंडिया' नामक प्रतिष्ठात्मक पुरस्कार को प्राप्त लिया है। इस संदर्भ में ति.ति.दे. के ई.ओ., ति.ति.दे. के जे.ई.ओ.(एच.&ई.) ने प्रशंसित किया।

दि. 23-12-2023 को तिरुपति, महति सभागार में ति.ति.दे. के द्वारा 'गीता जयंती' कार्यक्रम को आयोजित किया। इस संदर्भ में भगवद्गीता श्लोकों का पठन विजेता छात्राओं को ति.ति.दे. के जे.ई.ओ. (एच.&ई.) ने पुरस्कार प्रदान किया।

दि. 11-12-2023 से दि. 16-12-2023 तक तिरुपति, एस.वी.आयुर्वेद कॉलेज में आयुष मंत्रालय और ति.ति.दे. के संयुक्त आध्वर्य में 'सी.एम.ई. प्रशिक्षण कार्यक्रम को आयोजित किया। इस संदर्भ में ति.ति.दे. जे.ई.ओ. (एच.&ई.) ने भाग लेकर भाषण दिया।

SAPTHAGIRI (HINDI) SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthanams
Printing on 25-01-2024 & Posting at Tirupati RMS Regd. with the Registrar of Newspapers for
India under RNI No.10742/1957. Postal Regd.No.TRP/152/2024-2026
"LICENCED TO POST WITHOUT PREPAYMENT No.PMGK/RNP/WPP-04(2)/2024-2026"
Posting on 5th of every month.